"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन"

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

के शिक्षा अधिस्नातक (एम.एड.)

उपाधि की आशिंक

पुर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

निर्देशक

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा

(सहायक आचार्य)

शोधकर्त्री

मन्जु

(एम.एड. छात्रा)

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान

लाडनूं – 341306 (राजस्थान)

घोषणा – पत्र

मैं मंजु शोधकर्त्री जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं यह घोषण करती हूँ कि मैंने अपना लघुशोध प्रबंध का कार्य जिसका शीर्षक **"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्ध शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन" डॉ. गिरधारी लाल शर्मा** की कुशल एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

दिनांक **शोधकर्त्री**

मंजु

(एम.एड. छात्रा)

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता हैं कि मंजु (एम.एड. छात्रा) द्वारा **"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्ध शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन"**" विषय पर लघु शोध प्रबंध का कार्य मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है।

निर्देशक

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा

(सहायक आचार्य)

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

आभार प्रसून

सर्वप्रथम मैं मां सरस्वती को नमन करती हूँ।

शिक्षकों का मेरे जीवन में योगदान अनमोल है, शब्दों से परे है।

इसके लिए मैं उनकी सदा आभारी रहूँगी,

जिन्होंने मेरे जीवन को दिशा देने में सहायता की है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन" को विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता की अनुभूति हो रही हे। यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा प्रथम प्रयास है, जिसे सौभाग्यवश इस प्रतिष्ठित महाविद्यालय के विद्वतजनों को आशीष व संरक्षण प्राप्त हुआ है। शोधार्थी ने एम.एड. आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया है। अतः उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। फिर भी मैंने आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ।

फिर भी मैंने आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है। इस शोध को प्रभावी और सफलतापूर्वक पूर्ण कराने का श्रेय मेरे **निर्देशक (सहायक आचार्य) डॉ. गिरधारी लाल शर्मा** को है, जिनका विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है, इसके लिए मैं ऋणी रहूँगी। इन्होंने अपने व्यक्त जीवन के अमूल्य क्षणों में से इस कार्य को सम्पूर्ण कराने हेतु उन्होंने जिस निष्ठा के साथ

सहयोग किया है वह अविस्मरणीय है। मैं नतमस्तक हो इन्हें अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को समय पर पूर्ण करने का श्रेय, **मेरे निर्देशक (सहायक आचार्य) डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन तथा समस्त गुरूजन डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. भावाग्राही प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, पुस्तकालयाध्यक्ष महिमा जैन (शिक्षा विभाग)** जैन विश्व भारती शिक्षण संस्थान लाडनू, जिला नागौर को जाता है, जिनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन, स्नहे एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है। इसके लिए मैं उनकी ऋणी रहूँगी। वस्तुतः शोध प्रबन्ध उनके निरन्तर पथ–प्रदर्शन एवं सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है। मैं नतमस्तक हो उनका हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन ने लघु शोध प्रबन्ध कार्य को सरल एवं सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं उन लेखकों, विचारकों का भी हदय से कृतज्ञ हूँ जिनके समावेश इस लघु शोध कार्य में स्थान–स्थान पर किया गया है।

मैं अपने **सास–ससुर श्रीमती शरबती देवी, श्री रोहिताश यादव, माता–पिता श्रीमती सावित्री देवी, श्री फूलचन्द यादव, पति श्री अनिल कुमार यादव, पुत्र–पुत्री पीयूष, निकिता यदव, मित्र सरिता यादव, सपनेश गौतम** का सहृदय से आभार प्रकट करती हूँ, क्योंकि इनके सहयोग से ही मेरा यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया है।

अंत में मैं **एन.के. फोटो कॉपियर्स** के **श्री पवन कुमार सैन** की भी आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम, अनुभव एवं सहयोग से ही यह लघु शोध प्रबंध कलात्मक रूप से पूर्ण किया जाना संभव हो सका है। यदि इस लघु शोध प्रबंध की प्रस्तुति

आकर्षक, सुन्दर एवं स्पष्ट एवं समय से देय बन पडी है, तो इनका श्रेय निःसंदेह एन.के. फोटो कॉपियर्स को दिया जाना चाहिए।

अंत में परम पिता परमात्मा को शत्–शत् नमन करती हूँ जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं प्रस्तुत शोध का अध्ययन कर सकी।

स्थान–लाडनूं **प्रस्तुतकर्त्री**

दिनांक– **मन्जु**

(एम.एड. छात्रा)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	**प्रथम अध्याय शोध परिचय**	**1-23**
1.1	प्रस्तावना	2-13
1.2	समस्या का औचित्य	13-16
1.3	शोध से उभरने वाले प्रश्न	16
1.4	समस्या कथन	16
1.5	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	17-18
1.6	शोध के उद्देश्य	18
1.7	शोध की परिकल्पना	18-20
1.8	शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ	20-22
1.9	शोध विधि	22
1.10	न्यादर्श	22
1.11	चर	22
1.12	शोध अध्ययन के स्रोत	22-23
1.13	शोध में प्रयुक्त उपकरण	23
1.14	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	23
1.15	शोध का परिसीमन	23
2.	**अध्याय – द्वितीय सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**	**24-40**
2.1	प्रस्तावना	25-26
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ	26-27
2.3	सम्बन्धित साहित्य की परिभाषा	27
2.4	सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य	27-28
2.5	सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत	28-29
2.6	विदेशों में किये गये शोध अध्ययन	29-31
2.7	भारत में हुए सम्बन्धित शोध कार्य	32-40
3.	**अध्याय – तृतीय शोध विधि, न्यादर्श एवं उपकरण**	**41-64**
3.1	प्रस्तावना	42
3.2	शोध विधि	42-48
3.3	प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ	48-49

3.4	चर	49-50
3.5	चर के प्रकार	50
3.6	न्यादर्श	51-55
3.7	शोध में प्रयुक्त उपकरण	55-59
3.8	उपकरण का विवरण एवं प्रशासन	59-61
3.9	प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	61-64
4.	**चतुर्थ अध्याय** **प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या**	**65-74**
4.1	प्रस्तावना	66
4.2	तथ्यों का वर्गीकरण	67-74
5.	**पंचम अध्याय** **शोध सारांश एवं निष्कर्ष**	**75-87**
5.1	शोध सारांश	76-82
5.2	प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष	82-85
5.3	शैक्षिक निहितार्थ	85-86
5.4	भावी शोध हेतु सुझाव	86-87
5.5	उपसंहार	87
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	**88-90**
	परिशिष्ठ	

प्रथम अध्याय
शोध परिचय

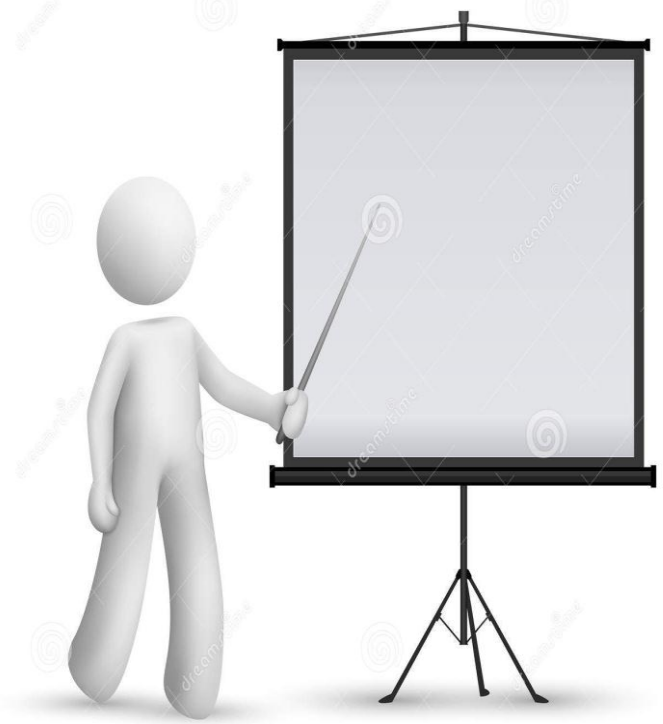

शोध में निरन्तर अभ्यास करना सात्विकतप है।

ज्ञान के समान संसार में कोई पवित्र वस्तु नहीं है।

प्रथम अध्याय

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना :–

मानव जीवन में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा ही वह उपादन है जो मनुष्य के बौद्धिक स्तर को बढ़ाकर उसके जीवन को सुखद बनाता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को साक्षर करना मात्र न होकर उसे सुसंस्कृत, अनुशासन युक्त, बौद्धिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से विकसित बनाना है। शिक्षा ही समाज में समानता तथा सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा – प्रदान करने का साधन है। इस कथन की पुष्टि करते हुए लॉक के शब्दों में कह सकते हैं कि –

'पौधों का विकास कृषि द्वारा तथा

मनुष्यों का विकास शिक्षा द्वारा होता है।''[1]

अतः शिक्षा के द्वारा अन्ततः मानवीय गुणों का विकास संभव हैं और इसीलिए हमारे देश के संविधान में ही नहीं बल्कि विश्व के अधिकांश संविधान में शिक्षा के अधिकार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

उचित शिक्षा ही व्यक्ति को अपने निजी एवं सार्वजनिक कर्त्तव्यों को शांति एवं संकटकालीन दोनों परिस्थितियों में न केवल न्याय एवं उदारतापूर्ण कार्य करने का कौशल प्रदान करती है, बल्कि अपने वातावरण को नियंत्रित करने और निहित संभावनाओं की पूर्ति में सक्षम बनाती है। शिक्षा के माध्यम से ही एक नागरिक अपने

---

[1] *कुदेशिया, उमेशचन्द, (2008) : "शिक्षा प्रकाशन" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*

अधिकारों को प्राप्त कर पाता हैं और अपने कर्त्तव्यों को ठीक ढ़ंग से निर्वहन कर पाता है। शिक्षा का ज्ञान ही उसे अपने अधिकारों का हनन होने से बचाता है। उचित–अनुचित का सही ज्ञान भी उचित – शिक्षा से ही सम्भव है।

हमारे देश में शिक्षा का प्रसार पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा तक तीव्र गति से हो रहा है। शिक्षा के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षा प्रशासन उत्तरदायी है। यह एक ऐसी मानवीय प्रक्रिया है जो अनेक तत्त्वों से प्रभावित व नियंत्रित होती है।

परिवार से लेकर राज्य तक के सभी कार्य किसी न किसी प्रशासन के माध्यम से चला करते है। किसी भी संस्था समिति या संगठन का कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रशासन ही उत्तरदायी होता है। कोई भी प्रशासन किसी संगठन अथवा संस्था को उसके उद्देश्यों तक पहुँचाने में सहायक होता है। उत्तम प्रशासन श्रेष्ठ एवं व्यवस्थित कार्य के लिए उत्तरदायी होता है। प्रशासन का सामान्य अभिप्राय नीति–निर्धारण, योजना निर्माण, जन माध्यम से क्रियान्विती परिवीक्षण, निर्देशन, मूल्यांकन एवं स्तरोन्नयन करना है। 'शासन' का अर्थ है आदेश निर्देश प्रदान करना।

शिक्षक–प्रशिक्षण शिक्षा जगत की नींव हैं क्योंकि गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण पर ही भावी राष्ट्रीय शिक्षा के स्वरूप की आधारशिला रखी जा सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक प्रक्रियाओं शिक्षण–विधाओं, मूल्यांकन प्रविधियों विषयवस्तु तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के बारे में ज्ञान व समझ को विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है। प्रशिक्षण कितना ही प्रभावी हो लेकिन एक या दो प्रशिक्षण शिक्षक को पूर्णता प्रदान नहीं करते है। अतः उपलब्धि स्तर बढ़ाने व

शिक्षक को पूर्णता की ओर ले जाने के लिए समय–समय पर नई तकनीक, नई विषयवस्तु, नई शिक्षण विधाओं एवं नई मूल्यांकन प्रक्रियाओं से अवगत करवाना जरूरी होता है। शिक्षण–प्रशिक्षण कार्य तभी प्रभावी होते हैं, जब वहाँ पर उचित प्रबन्ध हो। प्रबन्ध का उचित कौशल विकसित होने पर शिक्षक में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण शिक्षा तन्त्र के उपलब्धि स्तर में अपेक्षित सुधार होता है।

माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों के प्रशिक्षण को गुणवत्तायुक्त व प्रभावी बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रोग्राम ऑफ एक्शन के तहत् ''शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय'' को सम्मिलित किया गया।

सामान्यतः प्रत्येक प्रान्त में सेवा पूर्व शिक्षक–प्रशिक्षण की व्यवस्था सरकारी/गैर सरकारी शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में होती है। लेकिन सेवाकालीन शिक्षकों के लिए विषय सम्बन्धी अभिनवन व उपयोगी प्रशिक्षण की व्यवस्था का अभाव था। इसे मद्देनजर रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय प्रारम्भ किए जाने का सुझाव दिया था। इन महाविद्यालयों का उद्देश्य सेवापूर्व तथा सेवारत शिक्षकों के लिए गुणवत्तायुक्त प्रभाव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना है।

प्रबन्धन किसी भी संगठन का मस्तिष्क कहलाता है। यह नीति निर्धारण का कार्य करता हैं तथा उनके क्रियान्वयन की व्यवस्था करता है। यही भविष्य के लिए योजना निर्माण का कार्य भी करता है। कहा जाता हैं कि ''प्रबन्धन सतत् प्रक्रिया है जो निर्णय–निर्माण में लगा रहता है तथा उनके क्रियान्वयन के प्रयास करता है।'' प्रबन्धन एक प्रकार वित्तीय संसाधन है जो M अक्षर के पाँच शब्दों Money, Man Power, Materials, Machinery एवं Management से मिलकर बना है।

प्रबन्धन समस्या हल करने की विश्लेषणात्मक विधि है। इसमें समस्या को हर दृष्टिकोण से देखने का उसमें गहराई तक जाने का अवसर मिलता है। कार्य सम्पन्न करने में आने वाली बाधाएँ घटती जाती है। फलस्वरूप प्रक्रिया में निखार आ जाता है। कार्य को श्रेष्ठतम विधि से निपटाना ही समग्र गुणवत्ता प्रबन्धन की मूल भावना है।

स्कॉट के अनुसार :–

विवादों को न्यूनतम करना प्रबन्ध का अन्तिम उद्देश्य है।

प्रबंधन के द्वारा नियोजन का कार्य किया जाता हैं। नियोजन के कारण हम शिक्षण में अनिश्चितता व अस्पष्टता को दूर कर अपने उद्देश्यों तथा कार्यों में स्पष्टता व सौद्देश्यता लाते हैं, इससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी और उद्देश्यपूरक बनती हैं तथा प्रशिक्षु के अध्यापन कौशल में सुधार होता है। शिक्षक एक नेता होता है। प्रबन्धन हमें नेता के कार्यों, गुणों तथा दायित्वों से अवगत कराता है। प्रबन्धन से शिक्षक व प्रशिक्षुओं की कार्यदक्षता में वृद्धि होती है।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रबन्धन में मानव (शिक्षक–छात्र) मशीन (महाविद्यालय उपकरण) माल (शैक्षिक प्रक्रिया) तथा निष्पत्ति, मुद्रा बाजार (शुल्क अर्थ, व्यवस्था तथा मानव शक्ति नियोजन), प्रबन्धन (समन्वय) तथा संगठन (प्रबन्धक, प्राचार्य, शिक्षक, कम्रचारी, अभिभावक, छात्राध्यापक, साधन) आदि निहित हैं, इन सबको गतिशील बनाए रखने में प्रबन्धक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। प्रबन्धन एक विशेष क्रिया है। मानव समूह तथा संस्थाओं को संचालन के लिए अर्थात् महाविद्यालय के कर्मियों तथा महाविद्यालय संस्था संचालन (प्राचार्य) के लिए

प्रबन्धन का होना आवश्यक है। जैसा कि कुछ विद्वानों ने प्रबन्धन की परिभाषाएँ निम्न रूप में परिभाषित की है –

1. **हरोल्ड कीजन के अनुसार :–**

''औपचारिक रूप से संगठित समूहों में व्यक्तियों से मिलकर कार्य करने की कला ही प्रबन्ध है।''

2. **आर. एस. डेबर के अनुसार :–**

''प्रबंधन के अन्तर्गत उद्देश्यों का प्रतिपादन करना, उनको प्राप्त करने का नियोजन करना, संगठन स्थापित करना, कर्मचारियों की व्यवस्था करना, उन्हें निर्देशन देना, समन्वित करना, उनके कार्यों का मूल्यांकन करना, नियन्त्रण करना, उन्हें प्रोत्साहन देना और सभी क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करना है।''

इसलिए कहा जा सकता हैं कि ''प्रबन्धन में केवल आधिकारत्व ही शामिल नहीं हैं, अपितु इसमें वैज्ञानिक चिंतन, व्यवस्थापक, दिशा–निर्देशन तथा नियंत्रण आदि भी सम्मिलित होते हैं।'' संक्षेप में कहा जा सकता हैं कि प्रबन्धन नियोजन, क्रियान्वयन तथा पुनर्चिन्तन से सम्बन्धित होता है।

शिक्षण में प्रबन्धन का विशेष महत्त्व होता है। शिक्षा यद्यपि जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं, इस प्रक्रिया की सफलता उत्तम प्रबन्धन पर निर्भर करती है। यदि प्रबन्धन निरंकुश हैं तो शिक्षा की प्रक्रिया में अवरोध आयेंगे। यदि वह अधिनायकवादी है, तो एक व्यक्ति या संस्था का वर्चस्व रहेगा। यदि वह प्रबन्धन मुक्त हैं तो अराजकता की संभावना बढ़ेगी। इसलिए शिक्षा संस्थाओं की सफलता,

प्रशिक्षुओं व शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन उस संस्था को प्राचार्य की प्रबन्धन शैली पर निर्भर करती है।

वर्तमान में बदलते परिवेश के साथ संस्था प्रधान को कई तरह की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ रहा है। संस्था में आप अपनी टीम के बॉस हैं, तो विभाग द्वारा जो लक्ष्य आपको दिए गये हैं, उनको पूर्ण करने का दायित्व आपका एवं आपकी टीम का है। संस्था प्रधान को टीम भावना के साथ कार्य करना होता है। लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सदैव अपनी टीम के सदस्यों के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण अपनावें तथा लक्ष्य के प्रति सजग करते रहें। इसके उपरान्त प्रत्येक कार्मिक एवं शिक्षक को पता होना चाहिए कि आप उनसे क्या चाहते हैं एवं उनके कार्य के प्रति निर्धारित मापदण्ड क्या हैं, उनके अनुसार लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। लक्ष्य तय होंगे एवं योजना होगी तो वे पूरी लगन से काम में जुट पायेंगे।

प्रत्येक कार्य को प्लानिंग के अनुसार किया जाना आवश्यक है। कार्य योजना बनाते समय संस्था प्रधान का दायित्व हैं कि अपनी टीम के प्रत्येक सदस्य का सहयोग करे। इससे टीम भावना विकसित होती है। कार्य भी समय पर सम्पूर्ण हो जाता है। संस्था प्रधान अपने आपको सूचनाओं से अपडेट रखें, किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए नकारात्मक दृष्टिकोण को जगह नहीं देनी चाहिए। हमेशा टीम के सदस्यों को आशावादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहना ठीक होगा। कभी–कभी ऐसा वातावरण बन जाता हैं कि बुराई अच्छाई से ज्यादा बलवान होती हैं, बुराई से डरते हैं। यदि हम सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं, तो रास्ते पड़ी हर रस्सी को सांप समझने की भूल से बचना होगा।

आपको अपनी योग्यताओं में सुधार के लिए प्रयास करना होगा। अगर कोई संस्था का सदस्य अच्छा कार्य कर रहा हैं, किन्तु अनुशासित नहीं है तो विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हैं क्योंकि संस्था अर्थात् महाविद्यालय के शैक्षिक वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे शिक्षक को अवार्ड नहीं मिलना चाहिए। वही ऐसे शिक्षक जो अनुशासित तो हैं, परन्तु अच्छा कार्य नहीं कर रहा हैं, उन्हें भी अवार्ड देने के लिए बचना चाहिए। हमें प्रेरित करना होगा कि सकारात्मक दुष्टिकोण अपनाने हुए अनुशासन में रहकर अपने कार्यों को पूर्ण करें। कभी–कभी प्रधानाचार्य को सख्ती भी बरतनी पड़ती हैं तथा सख्ती बरतते समय कुछ सावधानी की आवश्यकता है। आपके द्वारा उठाया गया कदम सेवा नियमों के अनुसार मूल्यों को ध्यान में रखते हुए विभागीय एवं सेवा नियमों की उपेक्षा नहीं करे। प्रत्येक कार्य का सही आकलन करना आवश्यक है। प्रत्येक कार्य के लिए परिवीक्षण को प्राथमिकता देना आवश्यक है। परिवीक्षण से संस्था के कर्मचारियों को सजग किया जाता रहा है।

संस्था के प्रधानाचार्य को उच्चाधिकारियों से प्राप्त आदेश परिपत्रों को अपने क्षेत्र के अन्तर्गत पहुँचाना, अन्य संस्था से सम्पक्र बनाए रखना तथा कम्प्यूटर से अपडेट रहने से संस्था प्रधान की कार्यशैली में सहजता होगी। अवसर मिलने पर अपने सहयोगी सदस्यों एवं बालकों की उपलब्धियों व अच्छाईयों की मुक्त कण्ठा से प्रशंसा कीजिए। अपनी क्षमताओं को पहचानिये, अपनी विफलताओं को भूलते जाइए, सफलता को याद रखें, आप विजयी होंगे।

''गति ही जीवन हैं और गति मिलती हैं सक्रियता से।''[2]

---

[2] ***बघेला, एम. एस., (2007) : "शैक्षिक प्रबन्धन एवं विद्यालय संगठन", राजस्थान प्रकाशन, जयपुर.***

विद्यालय में अच्छे शैक्षिक वातावरण के लिए आपके कर्मचारियों एवं प्रशिक्षुओं के लिए योग व्यायाम अत्यंत उपयोगी हो सकता है। एकाग्रता एवं तनाव मुक्ति के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। न सिर्फ स्वास्थ्य शिक्षण देना, वरन् अनेक भ्रांतियों के निवारण में भी उपयोगी सिद्ध होगा। मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्राणायाम का अभ्यास सर्वोपरि है। प्राणायाम से मन, चित्त शांत व स्थिर होता हैं, जो शिक्षण के लिए उपयोगी है।

संस्था प्रधानाचार्य को अपनी संस्था के शैक्षिक एवं भौतिक उन्नयन के साथ–साथ स्थानीय प्रशासन को सहयोग, जन–सहयोग, कैरियर, परामर्शक, स्वच्छता अभियान तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों में समन्वयन का कार्य भी करना होता है। आज के परिवेश में समाज, सरकार, शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षार्थियों एवं उच्च अधिकारियों से संस्था प्रधानाचार्य को जो अपेक्षाएँ हैं, उस पर खरा उतरना होगा है। हम कार्यशैली में समन्वय लाते हुए बहुआयामी व्यक्तित्व को उन्नति के लिए शिखर पर पहुँचा सकते हैं। नैतिकता शिक्षक को समाज में सर्वोच्च स्थान प्रदान करती हैं, जिसका निर्वहन हमें पूरी निष्ठा से करना चाहिए।

प्राचार्य ही शैक्षणिक संस्था (महाविद्यालय) का प्राण एवं शक्ति का स्त्रोत है उसी की नीतियों के कारण संस्था समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करती है उसके व्यक्तित्व के चारों ओर सम्पूर्ण महाविद्यालय की व्यवस्था चक्कर काटती रहती है।

एस. एन. मुखर्जी के शब्दों में –

''प्राचार्य विद्यालय के आन्तरिक एवं बाह्य प्रशासन के मध्य एक कड़ी है। वह प्रशासन में गुम्बद का आधार रूपी पत्थर है।''

प्राचार्य के प्रशासनिक कर्त्तव्य–

1. **साधनों की पूर्ति करना –**

   संस्था संचालन का सबसे प्रमुख कार्य संस्था के दैनिक क्रिया–कलापों के लिए आवश्यक साधनों, सामग्री तथा वस्तुओं की पूर्ति करना है। इनके लिए प्राचार्य को भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, साज–सज्जा, शिक्षक इत्यादि व्यवस्था करनी पड़ती है।

2. **छात्रों का प्रवेश एवं वर्गीकरण :–**

   प्राचार्य को विभिन्न कक्षाओं में छात्रों को प्रवेश देने हेतु कार्य करना पडत्रता है। उसे देखना पड़ता हैं किस–किस कक्षा तथा किन–किन विषयों में कितने छात्रों को प्रवेश देना है। प्राचार्य छात्रों का वर्गीकरण उनकी योग्यता विषय आदि आधारों पर करता है।

3. **विद्यालय बजट :–**

   संस्था की आर्थिक स्थिति काफी मात्रा में प्राचार्य पर निर्भर करती है। प्राचार्य संस्था के आय और व्यय पर नियंत्रण रखता है। वह संस्था के विविध क्रिया–कलापों के लिए व्यय स्वीकृति करता है।

4. **कार्य–विभाजन :–**

   उपलब्ध साधनों के मध्य अच्छा समन्वय स्थापित करने तथा उनका अधिकतम उपयोग करने हेतु प्राचार्य वैज्ञानिक विधि से विभिन्न कर्मचारियों तथा शिक्षकों के बीच का विभाजन करता है।

5. **पाठ्य–पुस्तकों का चयन :–**

   प्राचार्य अध्यापकों के परामर्श से विभिन्न कक्षाओं के लिए विभिन्न विषयों की पाठ्य–पुस्तकों का चयन करता है। प्राचार्य इन पुस्तकों का चयन छात्रों के स्तर को ध्यान में रखकर करता है।

6. **अनुशासन व्यवस्था :–**

संस्था में अनुशासन बनाए रखना प्राचार्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। इस कार्य हेतु शिक्षक, छात्र, कर्मचारियों में अनुशासन स्थापित करना है।

7. **सहगामी व शारीरिक क्रियाओं की व्यवस्था :–**

प्राचार्य विभिन्न पाठ्यक्रम – सहगामी तथा शारीरिक क्रियाओं के लिए शिक्षकों की व्यवस्था करता है। जिससे प्रशिक्षुओं को सर्वागीण विकास के सहायक सहगामी क्रियाएँ – भाषण, नाटक, कविता, निबन्ध तथा शारीरिक क्रियाओं के अन्तर्गत खेलकूद, व्यायाम इत्यादि की व्यवस्था करता है।

8. **निरीक्षण कार्य :–**

एक प्रशासक के रूप में प्राचार्य को कार्यालय, अभिलेखों का सामयिक निरीक्षण करना छात्रावास में छात्रों की सुविधा, पुस्तकालय में पुस्तकों की स्थिति, प्रयोगशाला में साज–सज्जा व उपकरणों की व्यवस्था, समय–समय पर कक्षाओं में जाकर शिक्षकों के शिक्षण स्तर की जाँच, छात्रों के लिखित कार्य की जाँच करके अध्यापक–कार्य का निरीक्षण इत्यादि कार्य करता है।

2. शैक्षणिक कर्त्तव्य

प्राचार्य केवल एक प्रशासक शिक्षक ही नहीं, एक शिक्षक भी है, इसीलिए उसे अनेक शैक्षिक कर्त्तव्यों का निर्वहन करना पड़ता है।

(1) शिक्षक के रूप में –

प्राचार्य एक प्रशासक के साथ–साथ शिक्षक भी होना आवश्यक है। उसे कक्षा में सफलतम नेतृत्व तथा प्रभावी शिक्षण द्वारा शिक्षकों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें।

(2) **शिक्षक – प्रशिक्षण**

प्राचार्य को कभी–कभी शिक्षकों को शिक्षक–प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य हेतु वह शिक्षकों के प्रदर्शन–पाठों, विचार–गोष्ठियों, वाद–विवादों सम्मेलनों आदि की व्यवस्था करता है।

(3) **छात्रों से सम्पर्क –**

प्राचार्य संस्था के छात्रों से सम्पक्र करता है। वह कक्षा–शिक्षण, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं, छात्र–प्रतिनिधियों तथा अध्यापकों के माध्यम से सम्पक्र स्थापित करता है।

शैक्षिक उन्नयन की दृष्टि से प्राचार्य को चाहिए कि वह पुस्तकालय में जाकर अवश्य देखें। इससे विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

संस्था की रचनात्मक पहचान बनाने के लिए वार्षिक एवं अर्द्धवार्षिक पत्रिका भी अपना एक अलग प्रभाव डालती है। यद्यपि पत्रिका प्रकाशन एक व्यय, समय एवं श्रम साध्य कार्य हैं, परन्तु इससे विद्यार्थियों एवं सहकर्मियों को नवीन रचनात्मक कार्यों को करने की शिक्षा मिलेगी। इसमें श्रेष्ठ रचनाकार को पुरस्कृत किया जा सकता है। इससे छात्रों को इस कार्य हेतु प्रोत्साहन मिलेगा।

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर (ओवल लेड प्रोजेक्टर व पॉवर पॉइन्ट) पर आधारित शिक्षा कराने की शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षक के कालांशों का ऐसा समायोजन होना चाहिए कि इन साधनों से विद्यार्थी लाभ उठा सके तथा उनके शब्द भण्डार बढ़े तथा शिक्षण कार्य प्रभावशाली हो।

प्राचार्य को कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों से शिक्षा व दिनचर्या से सम्बन्धित बातचीत करनी चाहिए। इससे विद्यार्थियों में स्वतः अनुशासन बनाए रखा जा सकेगा। प्रस्तुत कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रबन्धन के महत्त्व को स्पष्ट करती है–

शिक्षा का आधार प्रबन्धन

इसकी चुस्ती और दुरस्ती,

जो जीते विद्यार्थी का मन।

इसका ढ़ीला–ढ़ाला होना,

पैदा करता उद्वेलन।।

यदि हो सीमित संसाधन,

किन्तु प्रबन्धन दृढ़ संकल्पित हो करे जतन।

तो हो सकती है संस्थान के लक्ष्य की प्राप्ति,

मिल सकती है उसे ख्याति।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि शैक्षिक प्रबन्ध वह धुरी है जिस मूल पर अध्यापक का सारा कार्य टिका रहता है। यदि वह चुस्त, संवेदनशील, सहयोगी, जागरूक, सजग, अनुशासनप्रिय एवं संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे तो प्रशिक्षुओं व शिक्षकों की गुणवत्ता प्रभावशाली होती है।

1.2 समस्या का औचित्य–

किसी भी देश की प्रशासन की कुशलता का विकास, उस देश की शिक्षा व्यवस्था से होता है। शिक्षा व्यवस्था की कुशलता, शैक्षिक प्रशासन पर

निर्भर करती है। शिक्षा प्रबन्ध जितना प्रभावशाली होगा, उतना ही सफलत प्रयास शैक्षिक लक्ष्यों की प्रगति का होगा।

ग्रैग के शब्दो में –

शैक्षिक प्रबन्धन उपयुक्त सामग्री का उपयोग करने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानवीय गुणों को प्रभावकारी ढ़ंग से विकसित किया जा सकता है।

शिक्षा में प्राचार्य की प्रबन्धन की आवश्यकता इसलिए है कि यह शैक्षिक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति करने के लिए अनेक कार्यक्रम बनाता है। जिससे शिक्षकों की गुणवत्ता से सम्बन्धित सेमिनार, कार्यशाला, गोष्ठियाँ तथा प्रशिक्षुओं से सम्बन्धित अनेक जयन्तियाँ, पर्व, भाषण प्रतियोगिताओं इत्यादि का आयोजन करता है। यह समाज, रीति–रिवाज, प्रथाओं, आदर्शों तथा आकांक्षाओं व छात्रों के स्तर को ध्यान में रखकर शैक्षिक कार्य व नियोजन का निर्माण करता है।

शैक्षिक लक्ष्य उस समय तक प्राप्त नहीं होते जब तक कि उपलब्ध साधनों का उपयोग शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए नहीं किया जा सकता। प्रत्येक संस्था में एक कुशल प्राचार्य का प्रबन्ध के रूप में होना आवश्यक हैं, क्योंकि प्रत्येक संस्था के पास साधन व समय सीमित ही होता है। उसे सीमाओं को ध्यान में रखकर अपने उद्देश्यों एवं प्राथमिकताओं का निर्धारण करना पड़ता है। अच्छा प्रबन्ध ही सदैव सौद्देश्य या उद्देश्यपरक होता है, जो संस्था के वातावरण, शैक्षिक नियोजन, क्रियान्वयन, शिक्षकों की सहभागिता व गुणवत्ता, छात्रों के शिक्षण कार्य, समय–सारणी व अनुशासन को ध्यान में रखकर एक कुशल प्रबंधक ही कार्य कर सकता है। सुदृढ़ संगठन संस्था के सफलतापूर्वक प्रबन्धक के लिए आवश्यक है। प्रभावकारी प्रबन्धक कर्मचारियों की शिकायतों, समस्याओं तथा आपसी विवादों को

निपटाकर सुदृढ़ श्रम सम्बन्धों की स्थापना करता है। प्रबन्ध वह माध्यम या साधन है, जो कर्मचारियों की असीमित क्षमताओं को जाग्रत करता हैं तथा उन्हें संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

ट्रेवाथा तथा न्यूपोर्ट के अनुसार –

''प्रबन्ध हमारे सम्पूर्ण वातावरण का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह वातावरण से प्रभावित ही नहीं होता हैं, बल्कि यह वह शक्ति हैं जो वातावरण को परिवर्तित करता है।''

कुशल प्रबन्धक द्वारा ही प्रशिक्षुओं की आत्मनिर्भरता, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्य व अनुशासन की भावना का विकास किया जा सकता है तथा सहभागिता विचार–विमर्श, उचित नेतृत्व व समन्वय की भावना के द्वारा शिक्षकों की कार्य–कुशलता व गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है। प्रचलित विधियों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है। कुशल प्रबन्धन सदैव ही समयानुकूल परिवर्तन करता है तथा परिवर्तनों को प्रेरणा देता है। सफल प्रबन्धन वह माना जाता है जो परिवर्तनों का पूर्वानुमान कर उनके अनुरूप अपने कार्यों, कार्य विधियों, नीतियों एवं योजनाओं में परिवर्तन तथा प्रत्युत्तरों का समन्वय कर लेता है।

शोधकर्त्री ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली को ही अपने शोध कार्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु इसलिए माना हैं क्योंकि शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया की सफलता उत्तम प्रबन्धन पर निर्भर है। यदि प्रबन्धन निरंकुश है तो शिक्षा की प्रक्रिया में अवरोध आयेंगे। यदि वह अधिनायकवादी है तो एक व्यक्ति या संस्था का वर्चस्व रहेगा। यदि मुक्त है तो अराजकता की संभावना बढ़ेगी। अतः किसी भी शैक्षणिक संस्था की सफलता

प्रशिक्षुओं व शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन संस्था के प्राचार्य की प्रबंधन शैली पर ही निर्भर रहता है।

1.3 शोध से उभरने वाले प्रश्न –

1. शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का पता लगाना।
2. प्राचार्य का शिक्षकों व कर्मचारियों के प्रति व्यवहार का पता लगाना।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के वातावरण का निरीक्षण करना।
4. प्राचार्य में व्यक्तिगत व आदर्श गुणों का पता लगाना।
5. प्राचार्य की प्रबंधन शैली द्वारा शिक्षकों की गुणवत्ता का अध्ययन करना।
6. प्राचार्य की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं पर क्या पड़ता है?
7. प्राचार्य की प्रबन्धन शैली शैक्षिक उन्नयन में किस प्रकार सहायक है?
8. प्राचार्य की कार्यकुशलता का पता लगाना।
9. प्राचार्य के अन्य संस्थानों से सम्पर्क का पता लगाना।
10. प्राचार्य व प्रशिक्षुओं में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

1.4 समस्या कथन –

"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन।"

1.5 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

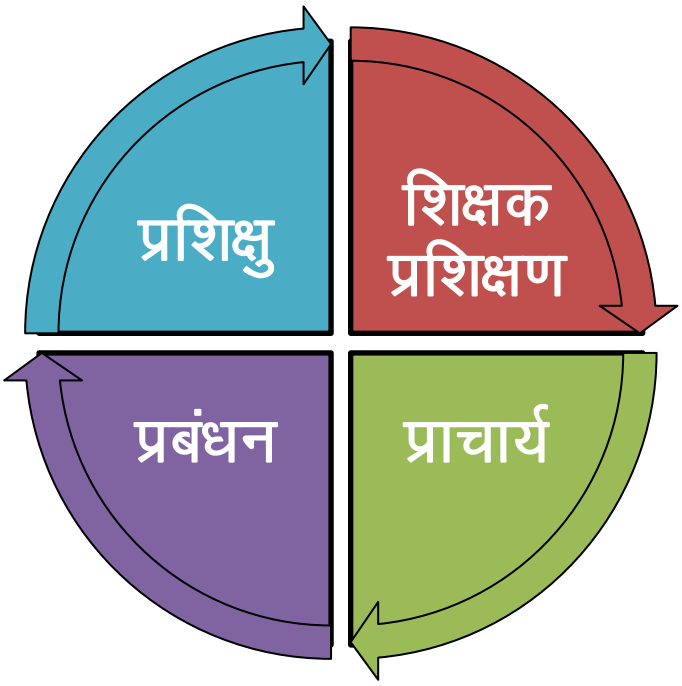

शिक्षक प्रशिक्षण –

शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा जगत की नींव है, क्योंकि गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण पर ही भावी राष्ट्रीय शिक्षा के स्वरूप की आधारशिला रखी जा सकती है। शिक्षण–प्रशिक्षण से शिक्षक प्रक्रियाओं, शिक्षण–विधाओं, मूल्यांकन प्रविधियों, विषयवस्तु तथा पाठ्यक्रम सहयोगी क्रियाओं के बारे में संचेतना, ज्ञान एवं समझ को विकसित करने का सार्थक प्रयत्न किया जाता है।

प्राचार्य –

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के संस्था प्रधान।

प्रबंधन –

प्रबन्धन का अर्थ हैं – उपलब्ध संसाधनों का दक्षतापूर्वक तथा प्रभावपूर्ण तरीके से उपयोग करते हुए लोगों के कार्य में समन्वय करना ताकि लक्ष्यों की प्राप्ति

सुनिश्चित की जा सके। प्रबन्धन अंग्रेजी शब्द ''मैनज–मेन–टेक्टफली'' को मैनेजमेन्ट कहते है।

प्रशिक्षु –

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका।

1.6 शोध के उद्देश्य–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षता का अध्ययन करना।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के अनुशासन का अध्ययन करना।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के महाविद्यालय वातावरण पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन करना।

1.7 शोध की परिकल्पना :–

कोई भी शोध प्रबन्ध का कार्य जब तक प्रारम्भ नहीं हो पाता, जब तक शोधकर्त्ता अपने शोध कार्य को परिकल्पना के द्वारा परिसीमन न कर ले। परिकल्पना

के अभाव में शोधकर्त्ता को शोध–सामग्री के संग्रह हेतु इधर–उधर भटकना पड़ता है। जिससे समय व धन दोनों का ही अपव्यय होता है। परिकल्पना के निर्माण के बिना कोई भी प्रयोग नहीं हो सकता और न ही वैज्ञानिक ढ़ंग का अनुसंधान सम्भव है। परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृत्ति पर निर्भर है।

परिकल्पना का अर्थ एवं परिभाषा :–

परिकल्पना शब्द को अंग्रेजी भाषा में Hypothesis कहते हैं जो दो शब्दों से मिलकर बना है – Hypo + Thesis , जिसमें हाइपो को अर्थ है सम्भावित या जिसकी पुष्टि की जाये तथा थिसिस का अर्थ है समस्या के समाधान का कथन। इस प्रकार हाइपोथिसिस का शाब्दिक अर्थ है – वह सम्भावित कथन जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता हैं अर्थात् पूर्व चिंतन।

1. **जॉन डब्ल्यू वेस्ट के अनुसार :–** ''परिकल्पना एक विचार युक्त कथन है जिसका प्रतिपादन किया जाता हैं और अस्थायी रूप में सही मान लिया जाता हैं और निरीक्षण प्रदत्तों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो आगे शोधकार्यों को निर्देशन देती है।''
2. **टाउनलैण्ड के अनुसार :–**''परिकल्पना अनुसंधान की समस्या के प्रारम्भिक स्तर के लिए सुझाया गया हल है।''
3. **मूले के अनुसार :–** ''परिकल्पना एक अभिक्रम अथवा तक्र वाक्य हैं, जिसकी स्थिरता का परीक्षण उसकी अनुरूपता, उपयोग, अनुभवजन्य प्रभाव का पूर्ण ज्ञान के आधार पर करती है।''

परिकल्पना की विशेषताएँ :–

1. परिकल्पनाएँ सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए।

2. परिकल्पना की प्रमाणिकता सिद्ध करने के लिए इसका आधार वैज्ञानिक होना चाहिए।
3. एक अच्छी परिकल्पना सिद्धान्त पर आधारित होती है।
4. परिकल्पना को स्पष्ट रूप से व्यक्ति किया जातना चाहिए।
5. एक अच्छी परिकल्पना में जिन आदर्शों को प्रस्तुत किया जाता है, वे वैज्ञानिक हो, जिनसे कि परीक्षण करने पर वे कसौटी पर खरा उतरे।

परिकल्पनाओं का महत्त्व :–

किसी भी शोध कार्य में परिकल्पना का वही महत्व है जो समुद्र में जहाजों को रास्ता दिखाने में प्रकाश स्तम्भ का होता है। परिकल्पना के महत्व को निम्न बिन्दुओं में प्रस्तुत कर सकते है –

1. परिकल्पना शोधकर्त्ता को निर्देशन देती है। उसके कार्य की रूपरेखा प्रस्तुत करती है तथा समस्या का सीमांकन करती है।
2. परिकल्पना तथ्यों की सार्थकता को निर्धारित कर रचनात्मक कार्यों के लिए प्रोत्साहित करती है।
3. परिकल्पना प्रदत्तों के संकलन के लिए आधार प्रस्तुत कर यह बताती है कि किसी प्रकार के उपकरण, परीक्षण तथा प्रविधि आवश्यक है।
4. यह शोध निष्कर्षों के लिए आधार प्रदान करती है।
5. शोध परिकल्पनाएँ नये शोध कार्यों के लिए प्रोत्साहित करती है।

1.8 शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
7. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
8. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के समायोजन पर सकारात्मकत प्रभाव पड़ता है।
9. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
10. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
11. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से प्रशिक्षुओं के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

12. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

1.9 शोध विधि –

शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है –

1.10 न्यादर्श –

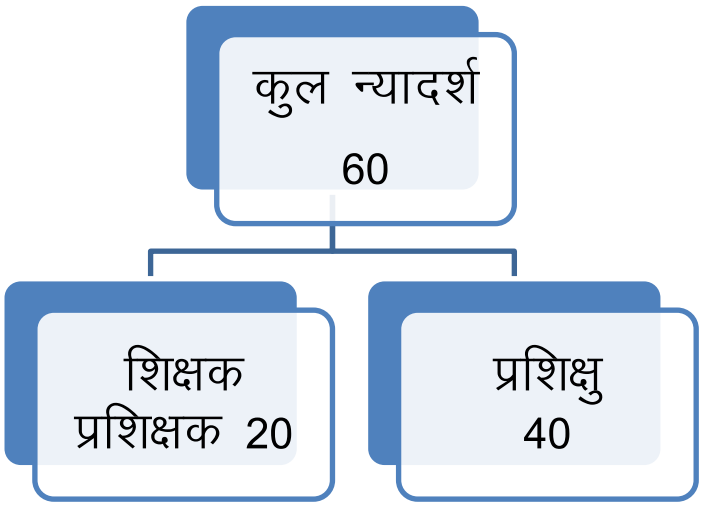

1.11 चर –

चर दो प्रकार के होते हैं –

1. स्वतंत्र चर – प्राचार्य की प्रबन्ध शैली
2. आश्रित चर – शिक्षक प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षु (नेतृत्व शैली, समायोजन व्यवसायिक दक्षता, अनुशासन)

1.12 शोध अध्ययन के स्रोत –

शोध अध्ययन हेतु तथ्य संकलन के लिए निम्न स्रोतों का प्रयोग किया जाएगा –

1. प्राथमिक स्रोत
2. द्वितीयक स्रोत

1. **प्राथमिक स्रोत –**

इसमें शोधकर्त्री द्वारा स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

2. **द्वितीयक स्रोत –**

पाठ्यपुस्तकों के रूप में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में हुए अनुसंधानों का सारांश, विश्वकोष, शोध पत्र–पत्रिकाओं का उपयोग किया जाएगा।

1.13 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

1.14 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिशत सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जायेगा।

1.15 शोध का परिसीमन –

1. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अलवर जिले की बहरोड़ तहसील को लिया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्ध शैली द्वारा प्रशिक्षु व शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन के अध्ययन तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय को लिया गया है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में कुल न्यादर्श 60 हैं जिसमें 20 शिक्षक तथा 40 प्रशिक्षु है।

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

एक शिक्षक वास्तव में कभी भी नहीं पढ़ा सकता यदि वह स्वयं आज न पढ़ा रहा हो, एक दीपक दूसरे दीपक को कभी भी प्रज्ज्वलित नहीं कर सकता, यदि वह स्वयं अपनी ज्योति को जलती हुई ना रखें।

रवीन्द्र नाथ टैगोर

अध्याय – द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

समस्या से सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन प्रत्येक अनुसंधान की महत्वपूर्ण प्रक्रिया हैं। इसमें समस्या से सम्बन्धित पूर्व में किये गये शोध अध्ययनों का चयन कर उनका अध्ययन किया जाता है। सम्बन्धित शोध साहित्य के अवलोकन से अनुसंधानकर्त्ता को चयनित समस्या की विशिष्ट एवं विभेदित जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में पूर्व के अनुसंधान और किये जाने वाले अनुसंधान के मध्य एक कड़ी बन जाती है। इसके लिए अनुसंधानकर्त्ता शोध पत्रिकाओं, शोध आलेखों, शोध पुस्तकों, समस्या के क्षेत्र से सम्बन्धित हुए अनुसंधानों का अध्ययन करता है। जिससे समय, श्रम की बचत एवं दोहराव जैसी समस्या से बचा जा सकता है। अतः विश्वसनीय एवं वैधतापूर्ण तथ्य एवं विश्वसनीयता प्राप्त करने के लिए समस्या का चयन सम्बन्धित साहित्य द्वारा किया जा सकता है। किसी भी शोध कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उससे सम्बन्धित साहित्य से विषय क्षेत्र को जानने के बारे में शोधकर्त्री को आसानी रहती है तथा सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्त्ता का कार्य अन्धे तीर के समान होता है।

इस अध्याय की महत्वपूर्णता के सन्दर्भ में चार्टर. बी. गुड. ने लिखा है–

''मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषीय परिकल्पना के स्त्रोत का द्वार खोल देती है। यह समस्या के परिभाषीकरण अध्ययन

की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विकास हेतु विस्तृत एवं गंभीर अध्ययन के लिए आवश्यक है।''

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ :–

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक शोध प्रक्रियाओं का एक महत्वपूर्ण अंग है। बिना सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन किये अनुसंधानकर्त्ता दिशाहीन होता है। इसके अभाव में शोधकर्त्ता को यह ज्ञान नहीं होता हैं कि इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका हैं, किस प्रकार से कार्य किया गया हैं तथा उसके क्या परिणाम निकले हैं। तब तक हम न तो समस्या का निर्धारण कर सकते हैं और न ही शोध समस्या की रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं। अतः शोधकार्य की सफलता के लिए सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अपरिहार्य है।

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य शोध की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से हैं, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्त्ता को अपनी शोध समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन ही शोधकर्त्ता को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता हैं, जहाँ पर वह अपने क्षेत्र की नवीन एवं विरोधी उपलब्धियों का परिचय प्राप्त करता है।

2.3 सम्बन्धित साहित्य की परिभाषा :–

सम्बन्धित साहित्य की परिभाषा अनेक विद्वानों ने निम्नलिखित रूप में परिभाषित की हैं –

1. **जे. डब्ल्यू. वेस्ट के अनुसारः–** सम्बन्धित साहित्य का महत्त्व अनुसंधान के लिए नितान्त आवश्यक हैं, यद्यपि इस कार्य में समय अधिक लगता हैं, सम्बन्धित साहित्य के साहित्य का हो चुका है। इस परिणाम को ज्ञात करने के लिए कौनसी विधि प्रयोग में लाई गई तथा इसके क्या परिणाम निकले व कौनसी समस्या का समाधान अभी शेष है।''
2. **गुड, बार तथा स्केट्स के अनुसार :–** ''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक हैं कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र को अनुसन्धान के क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।''
3. **डब्ल्यू. आर. बोर्ग के अनुसार :–** 'किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान हैं जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता हैं। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्त्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत भी हो सकता है।''

2.4 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य :–

शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के निम्न उद्देश्य है –

1. यह समस्या के समाधान के लिए उचित विधि, प्रक्रिया, तथ्यों के साधन तथा सांख्यिकी में तकनीकी का सुझाव देता है।
2. यह सम्बन्धित साहित्य अनुसंधान के लिए सिद्धान्त, विचार, धारणाएँ व्याख्याएँ तथा परिकल्पनायें प्रदान करता हैं, जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकता है।

3. यह अनुसंधान के लिए किये गये क्षेत्र में कितना और किस प्रकार हो चुका हैं, इसकी जानकारी देता है।

4. यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्त्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पना बना सकता है।

5. यह परिणामों के विश्लेषण करने में सहायता करता हैं तथा उपयोगी निष्कर्षों तथा तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है।

6. यह समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना निर्माण में सहायता करता है।

7. समस्या से सम्बन्धित विभिन्न साहित्यों का अध्ययन शोधकर्त्ता के ज्ञान के स्तर को बढ़ाता है।

2.5 सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत :– सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत दो प्रकार के होते हैं–

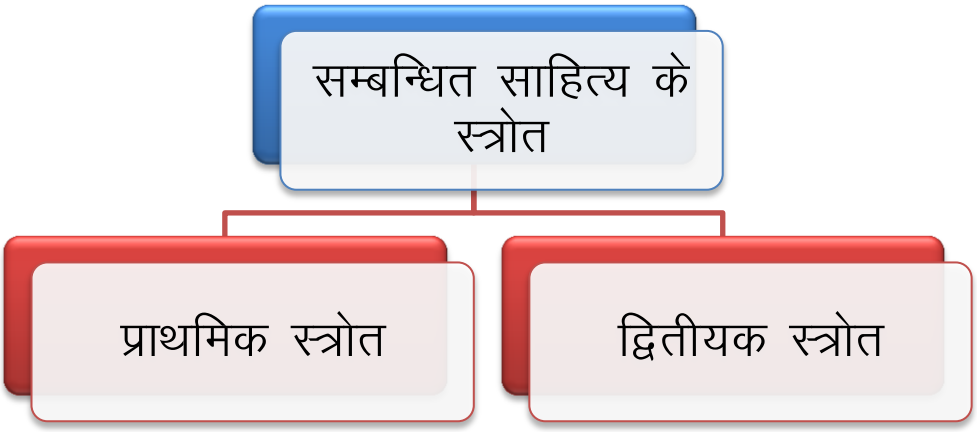

1. **प्राथमिक स्त्रोत** :– इसमें शोधकर्त्ता द्वारा किये गये कार्य में प्रतिवेदन तथा लेखक के मूल लेख आते हैं, जिसमें एक ही विषय पर निबंध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तकें इत्यादि आते हैं।

2. **द्वितीयक स्त्रोत** :– इसमें पाठ्य–पुस्तकें, भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में हुए अनुसंधानों का सारांश सुसंगठित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। विश्वकोष, शिक्षा सूची पर शिक्षा सार, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवं पत्रिकाएँ शामिल है।

2.7 विदेशों में किये गये शोध अध्ययन :–

1. **डॉन. एफ. क्रिस्टेनसन (मई 2012)** – ''ए कम्पेरीजन ऑफ द लिडरशिप स्टाइल्स ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन इन चार्जेज ऑफ स्टयूलिंग ऑन मेसूरीस सैकण्डरी सकूल्स।'' प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि यद्यपि बाहरी तथ्यों द्वारा विद्यालयी प्रशासन नियंत्रित रहता हैं और इसका प्रभाव विद्यालयी प्रशासन की निर्णायक क्षमता पर पड़ता है। यह विद्यालयी वातावरण में परिवर्तन लाने का एक प्रयास है।

2. **कैलियन ग्यूस (2012)** –''एक्सपिरीयन्सड प्रिंसिपल अकाउन्ट्स ऑफ देयर केरेक्टर डवलपमेन्ट।'' प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अनुभवी प्राचार्यों की जीवन शैली का अध्ययन करता रहा है कि कैसे वह चारित्रिक गुणों का विकास करते हैं और कैसे इसका प्रभाव उनकी नेतृत्व शैली पर होता है।

3. **केथलिन ए. लुफ्ट (मई 2012)** – ''ए रिसर्च स्टडी ऑफ ट्रान्सफोरमेशन लिडरशिप कम्पेयरिंग लिडरशिप स्टाइल ऑफ दा प्रिंसिपल्स।'' प्रस्तुत शोध के अध्ययन में पाया गया कि परिवर्तनशील नेतृत्व क्षमता प्राचीन नेतृत्व शैली पर आधारित अध्ययन का आधार है। इसमें संगठनात्मक वातावरण के मुख्य तथ्यों

जैसे वातावरण, मूल्य संज्ञानात्मक विकास आदि पर विशेष रूप से बल दिया गया।

4. कैथलीन एम. (मई 2011), ''द इन्फ्लूऐन्स ऑफ दा केम्पस क्लाइमेट फार डायवर्सिटी ऑन कॉलेज स्टूडेन्ट्स नीड फॉर काग्निशन।''

उद्देश्य :–

1. संरचनात्मक संगठन, मनोवैज्ञानिक वातावरण का सीखने के व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. महाविद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर आयामों के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. संरचनात्मक संगठन मनोवैज्ञानिक वातावरण का सीखने के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।
2. महाविद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर आयामों के प्रभाव का अध्ययन करता है।

5. निमिह, (2000), ''दा लीडरशिप वी हेवीयर ऑफ सीनियर हाई स्कूल प्रिंसिपल परसेम्शन एण्ड एम्सपेम्टेंशन ऑफ टीचर एण्ड प्रिंसिपल ।''

उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक की नेतृत्व शैली का अध्यापकों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के प्रत्येक विभाग व अध्यापकों के बीच अनुकूलनशीलता का अध्ययन करना।

3. प्रधानाध्यापक की व्यक्तित्व प्रभावशीलता का अध्यापकों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक की नेतृत्व शैली का अध्यापकों पर काफी हद तक प्रभाव देखा गया।
2. विद्यालय के प्रत्येक विभाग व अध्यापकों के बीच अनुकूलनशीलता पायी जाती है।
3. प्रधानाध्यापक के व्यक्तित्व का प्रभाव अध्यापकों पर देखा गया।

2.8 भारत में हुए सम्बन्धित शोध कार्य –

6. डॉ. कुमार संजीव, (जुलाई, 2010), ''प्रधानाध्यापकों की प्रबन्धन शैली का अध्यापकों की कार्यदक्षता पर प्रभाव।''

उद्देश्य :–

1. प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों की प्रबन्धन शैली का अध्ययन करना।
2. प्रधानाध्यापक व कार्यरत अध्यापकों के सम्बन्धों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों की प्रबन्धन शैली प्रभावी रही।
2. प्रधानाध्यापक व कार्यरत अध्यापकों के सम्बन्ध भी प्रभावी थे।

7. रामावत रेणुका, (2010) ने ''शैक्षिक वातावरण के निर्माण में माध्यमिक विद्यालय प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार एवं व्यक्तित्व विशेषकों के प्रभाव का अध्ययन।''

उद्देश्य :–

1. प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार का उनके सृजनात्मक उद्दीपन एवं संज्ञानात्मक प्रोत्साहन व्यवहार तथा प्रर्यावरण स्वीकृति व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार का उनके सृजनात्मक उद्दीपन एवं सृजनात्मक प्रोत्साहन व्यवहार तथा पर्यावरण स्वीकृति व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।
2. प्रधानाध्यापकों के प्रशासनिक व्यवहार प्रभावपूर्ण थे।

8. मीणा ममता, (2007) – ''प्रधानाध्यापक की नेतृत्व शैली का अध्यापकों की कार्यकुशलता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।''

उद्देश्य –

1. प्रधानाध्यापक के प्रजातांत्रिक एवं निरंकुशवादी प्रशासन का अध्यापकों की परिस्थितियों पर नियंत्रण करने की शक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।
2. प्रधानाध्यापक के प्रजातांत्रिक व निरंकुशवादी प्रशासन का अध्यापकों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

1. शोधकर्त्री ने निष्कर्ष निकाला कि नेतृत्व चाहे प्रजातांत्रिक हो या निरंकुशवादी, अध्यापकों के आत्मविश्वास पर प्रभाव नहीं डालता है।
2. प्रजातांत्रिक प्रधानाध्यापक व निरंकुशवादी प्रधानाध्यापक की नेतृत्व शैली अध्यापकों की अनुकूलशीलता पर प्रभाव डालती है।

9. तिवारी, चन्दा एवं तिवारी, सुमिता, (2007) ने ''प्रधानाध्यापक की निर्णय प्रक्रिया का विद्यालय पर्यावरण प्रभाव।''

उद्देश्य :–

1. सरकारी व गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों की निर्णय प्रक्रिया का विद्यालय पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. सरकारी व गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की निर्णय प्रक्रिया का विद्यालय पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है।

10. शर्मा, पूजा, (2006), ''प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का अध्यापक अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन।''

उद्देश्य :–

1. प्रस्तुत शोध में प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का अध्यापक अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन करना।

2. प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का विद्यालयों में प्रभाव का अध्ययन तथा प्रधानाचार्यों की कार्य शैली का अध्यापक कार्य–शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का अध्यापक अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता का विद्यालय वातावरण पर तथा प्रधानाचार्यों की कार्य शैली का अध्यापक कार्य शैली पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

11. मिश्रा ए. एन., (2003–04), का अध्ययन, ''नेतृत्व शैली उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक अध्ययन।''

उद्देश्य :–

1. प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैली की गुणवत्ता का अध्ययन करना।
2. प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैली का विद्यार्थियों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्रधानाध्यापक व विद्यार्थियों के बीच सामंजस्य व व्यवहार का पता लगाना।

निष्कर्ष :–

1. प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैली की गुणवत्ता उन्नतशील थी।
2. प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैली का विद्यार्थियों पर प्रभाव पड़ता है।
3. प्रधानाध्यापक व विद्यार्थियों के बीच सामंजस्य व व्यवहार प्रभावी था।

12. अवस्थी, एस. (2002), ''टीचर्स ऐलीनेशन देयर मोटिवेशन, मॉरल एण्ड प्रिंसिपल्स लीडरशिप एण्ड इन्स्टीट्यूशनल इफेक्टिवनेस इन डिफरेंट इन्टरमीडियेट कॉलेज ऑन द बेसिक ऑफ ऑर्गनाइजेशनल क्लाइमेट।''

उद्देश्य :–

1. प्रस्तुत शोध में संस्थागत वातावरण व प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली का शिक्षकों की कार्यशैली पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली शिक्षकों की कार्यशैली को प्रभावित करती है।

13. श्री वास्तव आरत्र के (2001), ''प्रधानाध्यापकों के निर्णय निर्माण प्रक्रिया में अध्यापकों में प्रत्यक्ष बोध की भूमिका।''

उद्देश्य :–

1. प्रधानाध्यापक की निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में अध्यापकों की सहभागिता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. इस शोध में पाया गया कि कुद ही अवसरों पर प्रधानाध्यापक अध्यापकों से अन्वेषणात्मक सलाह करते हैं।

14. कुमार, सुरेन्द्र, (2000) – ''शैक्षिक प्रावधानों के प्रति माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की चेतना का अध्ययन।''

उद्देश्य –

1. शैक्षिक प्रावधानों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की संस्था प्रधानाध्यापक की चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।

2. शैक्षिक प्रावधानों के प्रति महिला संस्था प्रधानों एवं पुरूष संस्थान प्रधानों की चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

1. शहरी क्षेत्र के संस्था प्रधान बचपन से ही शिक्षित वातावरण में रहते हैं। उनके परिवार और आस–पास के लोग शिक्षित है। परन्तु ग्रामीण क्षेत्र के संस्था प्रधान अशिक्षित वातावरण में रहते हैं। इसलिए उनमें जागरूकता कम और शहरी क्षेत्र में अधिक पायी जाती है।
2. शहरी क्षेत्र में संस्था प्रधान दिन–प्रतिदिन होने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी लेते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन शिक्षित और उच्च वर्ग के लोग आपस में मिलकर रहते हैं। समाचार–पत्र पढ़ते रहते हैं, इसलिए उनमें जागरूकता अधिक पायी जाती है।

15. भागिया, झूंगा एन.एम. श्रीकांत डी.एच., (1986) – **''रॉल परफोर्मेन्स ऑफ हेड्स ऑफ कॉलेज''**

उद्देश्य –

1. कॉलेज प्राचार्य की भूमिका को पहचानना।
2. प्राचार्यों की विभिन्न कार्य क्षेत्रों में भूमिका को प्रदर्शित करना।

निष्कर्ष –

1. कॉलेज प्राचार्यों की विभिन्न भूमिकाओं में व्याख्यान को अकादमी और पाठ्यक्रम प्रबन्धन के साथ जोड़ा गया, जिसे उसके कार्य सम्पादन में अंतिम स्थान पर रखा गया।

2. प्रशासनिक भूमिका को अक्सर अनुदेशनात्मक कार्यक्रम के पर्यवेक्षक से तुलना की गयी है। पाठ्यक्रम क्रियाओं के समर्थक, संस्था प्रधान और अध्यापकों ने यह बताया कि प्राचार्य का अधिक झुकाव प्रशासकीय भूमिका पर होता है।

16. वर्मा, जे. एस., (1985) –''ए कम्पेरेटीव स्टडी ऑफ रोल कन्फ्लीक्ट ऑफ मेल एण्ड फीमले एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेटर्स इन रिलेशन टू देयर पर्सनेल्टी ट्रेटर्स एण्ड एडज्सटमेन्ट, मेरठ युनिवर्सिटी।''

उद्देश्य –

1. स्त्री पुरूष के शैक्षिक प्रशासकीय भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शैक्षिक प्रशासन में व्यक्तिगत परिचय और कार्य भूमिका का सह–सम्बन्ध बताना।

निष्कर्ष –

1. पुरूष के शैक्षिक प्रशासन में उसके आर्थिक मूल्य, कार्य क्षमता और स्वास्थ्य का उसकी भूमिका से सीधा सम्बन्ध है। जबकि महिला के शैक्षिक प्रशासन में उसके सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य और कार्यक्षमता का उसकी भूमिका से सीधा सम्बन्ध है।
2. समायोजन का उसकी कार्य भूमिका से नकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता हैं और इसकी सफलतापूर्वक भविष्यवाणी की जा सकती है।
3. समायोजन का उसकी कार्य भूमिका से नकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता हैं और इसकी सफलतापूर्वक भविष्यवाणी की जा सकती है।

17. शाह. एस. (1981), ''ए स्टडी ऑफ द इम्पेक्ट ऑफ स्कूल क्लाइमेट ऑन स्टूडेन्ट्स एण्ड देय टीचर्स इन अलीगढ़ डिस्ट्रिक्ट।''

उद्देश्य :–

1. अध्यापकों के व्यक्तित्व कार्य निष्पादन, विद्यार्थियों के समायोजन, स्व–प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न विद्यालयी वातावरण की खोज।

निष्कर्ष :–

1. विद्यालय वातावरण समायोजन को प्रभावित नहीं करता, परन्तु विद्यालय की निष्पति पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है। अध्यापकों के कार्य निष्पादन तथा विद्यार्थियों के समायोजन तथा उनकी शैक्षिक निष्पति पर विद्यालय–वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन से सम्बन्धित शोध पत्र – पत्रिकाएँ :–

18. छुगाणी, कमलेश, (2015)[1], ''प्रभावशाली नेतृत्व की कला'' युवादृष्टि, अंक 5, पृष्ठ नं. 30 प्रभावी लीडर के व्यक्तित्व का नेतृत्व की क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना। नेता के व्यवहार का समूह के सदस्यों पर प्रभाव का अध्ययन करना। निष्कर्ष में पाया गया कि प्रभावी लीडर के व्यक्तित्व का नेतृत्व की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नेता के व्यवहार का समूह के सदस्यों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

19. ललिता कुलवंत चपलोत,[2] ''प्रभावी नेतृत्व सफलता की सीढ़ी।'' प्रस्तुत शोधपत्र में यह उल्लेख किया गया हैं कि नेतृत्व का गुण जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति को सफलता की ऊँचाईयों तक पहुँचाता है। इसके लिए व्यक्ति में निम्न गुण

---

[1] *शिविरा, अंक 7, जनवरी 2016, पृष्ठ संख्या 22.*
[2] *युवादृष्टि, अंक-5, मई 2015, पृष्ठ संख्या 33.*

होने आवश्यक है – श्रमशील, साहसी, अहम से दूरी, सहयोग व मैत्री की भावना इत्यादि। अतः सबको श्रीकृष्ण की भाँति गुणानुरागी, गुण–दोष को सम्यक् प्रकार से जानने वाला, आशा, उत्साह, उमंग, प्रेरणा एवं धैर्य जैसे गुणयुक्त सकारात्मक चिंतन का धनी, व्यक्ति ही सफलत नेतृत्व की कर्साटी पर खरा उतर सकता है।''

20. **रामेश्वर लाल वर्मा[3], ''नेतृत्व एवं प्रबन्धन''** प्रस्तुत शोधपत्र में यह उल्लेख किया गया हैं कि वर्तमान समय में बदलते परिवेश में संस्था प्रधान को किस प्रकार से कार्य करने तथा उनमें किन गुणों का होना आवश्यक है तथा किस–किस रूप में भूमिकाओं का निर्वहन करता है– जैसे प्रत्येक कार्य को प्लानिंग के अनुसार करना, विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति करना, सूचनाओं से अपडेट रहना इत्यादि। उनमें सकारात्मक व आशावादी दृष्टिकोण, सहयोग की भावना, अनुशासित, प्रेरणादायक, विद्यार्थियों के लिए योग व्यायाम की शिक्षा तथा वह कभी टीम के बॉस के रूप में कभी सहयोगी, परिवीक्षण व नोडल अधिकारी की भूमिका के रूप में कार्य करता है। संस्था प्रधान को विद्यालय के शैक्षिक वातावरण उन्नयन के साथ–साथ स्थानीय प्रशासन का सहयोग, जनसहयोग, कैरियर परामर्शक, स्वच्छता अभियान तथा अन्य सरकारी योजनाओं में समन्वय का कार्य भी करना होता है।

21. **प्रशांत मई, (2015), ''नेतृत्व प्रभावी कैसे बनें? युवादृष्टि, अंक 5, पृष्ठ सं. 31 एक प्रभावी नेतृत्व के गुणों का अध्ययन करना।** प्रभावी नेतृत्व द्वारा विद्यार्थियों में अनुशासन व सहिष्णुता की भावना के विकास का पता लगाना। निष्कर्ष एक

---

[3] *सरीन एण्ड सरीन (2005), सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं समीक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*

प्रभावी नेता में साहस सामंजस्य, संगठन के प्रतिबद्ध, अनुशासन व प्रोतसाहन के गुण पाए गए। प्रभावी नेतृत्व द्वारा विद्यार्थियों में अनुशासन व सहिष्णुता की भावना का विकास होता है।

22. **तातेड़, बी. डी. व पी. के. (2015), ''प्रबन्धन का मूलमंत्र प्रभावी नेतृत्व'' युवादृष्टि, अंक 5, पृष्ठ सं. 20–21** प्रभावी प्रबंधन का मूलमंत्र क्या हैं का अध्ययन करना। प्राचीन विचारधारा का वैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार नेतृत्व की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रबंधन में नेतृत्व की सफलता के घटकों का अध्ययन करना। निष्कर्ष में पाया गया कि प्रभावी प्रबंधन का मूलमंत्र नेतृत्व है। प्राचीन विचारधारा व वैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार नेतृत्व की क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया। प्राचीन विचारधारा के अनुसार नेतृत्व की क्षमता जन्मजात होती है तथा वैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार नेतृत्व की क्षमता शिक्षक–प्रशिक्षण द्वारा अर्जित की जाती है। प्रबंधन में नेतृत्व की सफलता नेता, अनुयायी और प्रस्तुत परिस्थिति पर निर्भर है।

अध्याय तृतीय
शोध विधि, न्यादर्श एवं उपकरण

अनुसंधानकर्ता यह नहीं जानती कि इनके उद्देश्यों की परीक्षा के लिए कौन-कौनसी विधियां उपलब्ध है, वे व्यावहारिक प्रश्नों के निर्माण में असफल रहते है।

गुड एण्ड बैस्ट

अध्याय – तृतीय
शोध विधि, न्यादर्श एवं उपकरण

3.1 प्रस्तावना :–

सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण के पश्चात अनुसंधान कार्य में किसी भी शोध समस्या के समाधान के लिए और उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान विधि, प्रविधि एवं उपकरणों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना है। विधि–प्रविधि, उपकरण सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य में आधारशिला रूपी नींव है। अतः अनुसंधान कार्य के लिए उपयुक्त अध्ययन विधि, उपकरण एवं सांख्यिकी का चयन करना महत्वपूर्ण है। एक अनुसंधानकर्त्ता अपने अनुसंधान को प्रारम्भ करने से पूर्व उसके सभी पक्षों के सम्बन्ध में पहले ही निर्णय लेकर नियोजन करता है और इसी नियोजन के आधार पर यह अनुसंधान कार्य में आने वाली कठिनाईयों का सामना आसानी से कर पाता है। अतः यह अति आवश्यक हैं कि शोधकार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उपकरण व विधियों का नियोजन व निर्माण किया जाये, तभी अनुसंधान कार्य प्रभावी बन सकेगा।

3.2 शोध विधि :–

शोधकर्त्ता कार्य के लिए जिस विधि का प्रयोग करता हैं, वह शोध समस्या की प्रकृति पर निर्भर करती है। यदि समस्या की प्रकृति वर्णनात्मक हैं तो उसे वर्णनात्मक, ऐतिहासिक हो तो एतिहासिक अनुसंधान तथा प्रयोगात्मक हो तो

प्रयोगात्मक अनुसंधान कहेंगे। इस प्रकार विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर हैं कि अनुसंधान कैसा होगा अथवा उसकी विधि क्या होगी?

शोध विधि का तात्पर्य उस मार्ग से हैं जिस पर चलकर किसी रहस्य की खोज की जा सके अर्थात् एक निश्चित व्यवस्था जो लक्ष्य पर पहुँचने का साधन है। शोध अध्ययन के लिए प्रायः एक ही विधि का चयन किया जाता हैं।

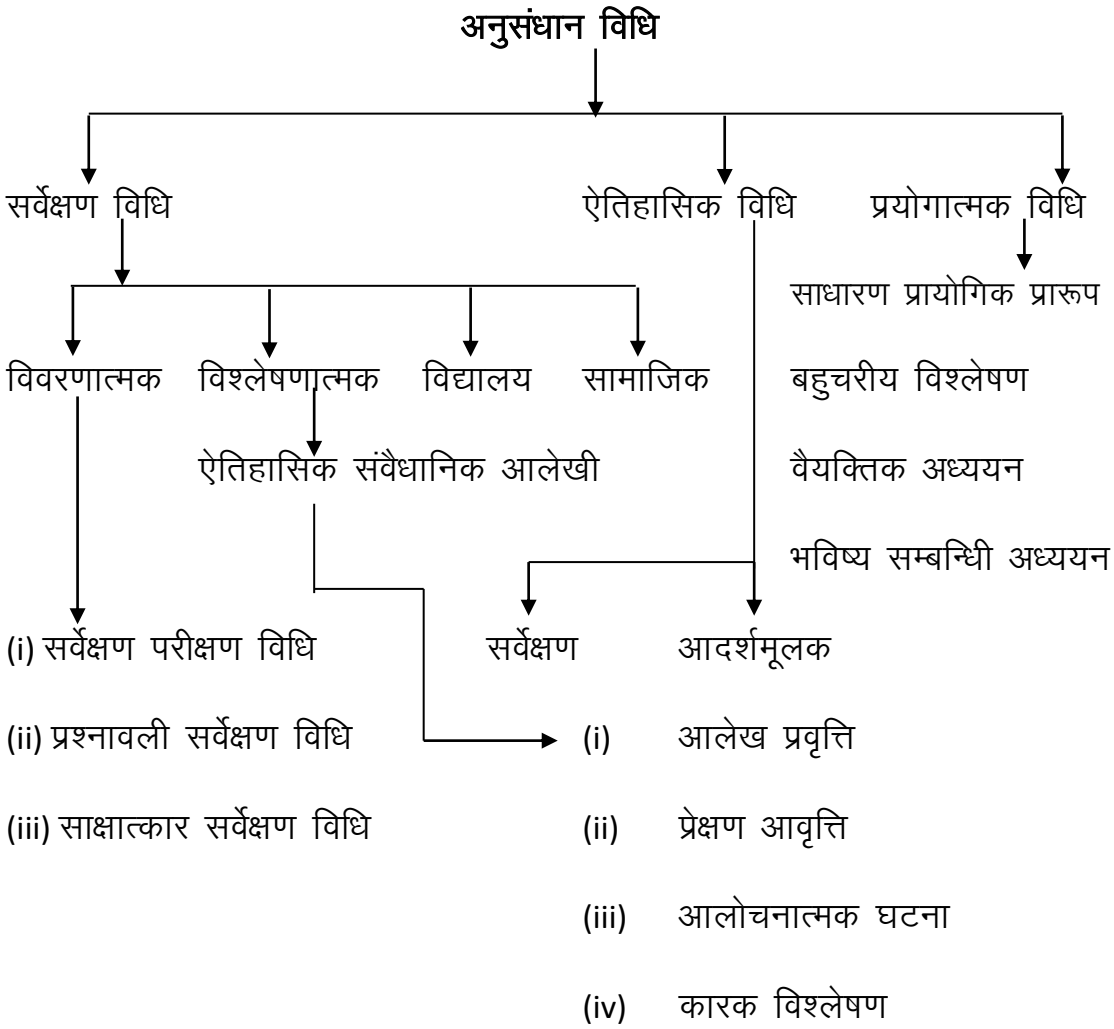

अनुसंधान कार्य को सफल बनाने के लिए समस्या अध्ययन की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए वैध व विश्वसनीय विधि का चयन किया जाता है। अनुसंधान में साक्षात्कार अवलोकन विधि, प्रयोगात्मक आदि अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता

है तथा शोधकर्त्ता किस विधि का चयन करेगा वह शोध समस्या पर निर्भर करता है। अतः शोध समस्या के आँकड़े तैयार करने हेतु शोध कार्य को वैज्ञानिकता या प्रमाणिकता प्रदान करने हेतु शोधकर्त्ता आवश्यक रूप से कुछ विधियों, प्रविधियों, उपकरणों के लिए शैक्षिक अनुसंधान की विधियों में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया है ताकि सही परिणाम प्राप्त हो सके।

3.2.1 शोध में प्रयुक्त विधि :– प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सर्वेक्षण विधि :–

सर्वेक्षण विधि को अंग्रेजी भाषा में Survey Method कहा जाता है। Survey दो शब्दों Sur + Vey से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है over तथा over का अर्थ To Look होता है। अतः इसका शाब्दिक अर्थ किसी घटना को ऊपर से देखना है। इस प्रकार सर्वेक्षण का अर्थ अवलोकन या अन्वेषण से होता है जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र को किसी एक स्थिति अथवा प्रचलन के सम्बन्ध में अर्थात् सूचना प्रदान करना होता है। सर्वेक्षण का सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान में हैं, अभ्यास जो चालू है, प्रतिक्रियाएँ जो चल रही है, अनुभव जो किये जा रहे हैं अथवा नवीन दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं, उन्हीं से सम्बन्ध हैं।

3.2.2 सर्वेक्षण की परिभाषाएँ :–

मैकमिलन के अनुसार :– ''सर्वेक्षण एक संगठन की प्रक्रिया हैं। इसका उस समय प्रयोग किया जाता हैं , जब अनुसंधान प्राथमिक रूप में कार्यकारण सम्बन्ध से सम्बन्धित नहीं होता।''

ट्रेवर के अनुसार :– ''सर्वेक्षण विधि वर्तमान कार्यों की प्रकृति को निश्चित करने की विधि है।''

एम. एल. विटनी के अनुसार :–''सर्वेक्षण आधुनिक सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार का व्यवस्थित प्रयास है। जिसमें कि वर्तमान सामाजिक संस्थानों के स्तर समूह तथा क्षेत्रों के सम्बन्ध में विवेचन, व्याख्या आदि सम्बन्धित बातों का उल्लेख किया जाता है।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सर्वेक्षण विधि से सर्वेक्षण द्वारा सूचनाएँ एवं गणनाओं को तक्रपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए यह विधि बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है।

3.2.3 सर्वेक्षण के उद्देश्य :–

1. सूचनाओं का संकलन करना।
2. किसी विशिष्ट कारका का पता लगाना।
3. किसी व्यवहार या घटना का पूर्वानुमान लगाना।
4. दो चरों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध का पता लगाना।

3.2.4 सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ :–

1. सर्वेक्षण विधि द्वारा एक समस्या में बहुत सारे लोगों के बारे में आंकड़े प्रापत किये जा सकते हैं।
2. इसका सम्बन्ध व्यक्ति से न होकर सम्पूर्ण जनसंख्या अथवा न्यादर्श से होता है।
3. इसके लिए विशिष्ट एवं कल्पनापूर्ण नियोजन आवश्यक हैं।

4. इसमें स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी जानकारी प्रदान की जाती है।
5. वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) अनुसंधान हेतु गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है।
6. इस विधि के द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान संभव है। प्रत्यक्ष ज्ञान से जो निष्कर्ष निकालते हैं वे सत्य के निकट होते हैं।

सर्वेक्षण विधि अनुसंधान में बहुत उपयोगी है। इसी कारण से इसका बहुत उपयोगी किया जाता है।

3.2.5 सर्वेक्षण विधि के सोपान :– सर्वेक्षण को स्पष्ट बनाने के लिए उसके आयोजन के प्रमुख सोपान निम्नलिखित है–

1. समस्या की व्याख्या।
2. उद्देश्य का निर्धारण
3. अध्ययन क्षेत्र परिभाषित करना
4. उपकरण एवं प्रविधियों का चुनाव
5. प्रतिदर्श का चयन
6. समग्र सूची का निर्माण
7. दत्त संकलन एवं विश्लेषण

3.2.6 सर्वेक्षण विधि के लाभ :– सर्वेक्षण विधि के लाभ निम्नलिखित है –

1. सर्वेक्षण अध्ययन वर्तमान स्थितियों, स्तरों तथा समस्याओं का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त है।

2. सर्वेक्षण अध्ययन भावी विकास के क्रम या प्रवृत्तियों को पूर्वानुमान देता है। यह वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं।

3. इन अध्ययनों के लिए वांछित उपकरण सरल तथा उपयोगी होते हैं। इनका प्रयोग व प्रशासन सरल होता है।

4. आवश्यक उपकरणों के माध्यम से संग्रहित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या सरल होती है। इनसे सहज ही निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

5. इस प्रकार के अध्ययनों के लिए उपकरणों का विकास व निर्माण करना भी अधिक कठिन नहीं है।

6. सर्वेक्षण में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता हैं और उसी के द्वारा संकलित तथ्यों का विश्लेषण, वर्गीकरण, मूल्यांकन, सामान्यीकरण आदि किया जाता हैं

7. इस प्रकार के अध्ययनों के द्वारा कारण–प्रभावों के मध्य सहल ही सम्बनध स्थापित किये जा सकते हैं। इनमें कई प्रकार के कारणात्मक सम्बन्धों के प्रयोगात्मक तथा नियंत्रित शोध अध्ययन किये जा सकते हैं।

3.2.7 सर्वेक्षण विधि की सीमाएँ :– सर्वेक्षण विधि के लाभ के साथ–साथ कुछ सीमाएँ भी हैं, जो निम्न प्रकार है –

1. सर्वेक्षण प्रायः असम्बद्ध एवं बिखरे होते हैं, अतः इन्हें पूर्ण रूप से संकलित करके किसी सिद्धान्त का निर्माण नहीं किया जा सकता है।
2. सर्वेक्षण विधि से समाज के एक अंश का अवलोकन हो पाता हैं। इससे समस्त सत्य को समझना मुश्किल है।

3. सर्वेक्षण विधि में घटना का दृष्टिगोचर होना आवश्यक हैं, लेकिन अनुसंधानकर्त्ता वहाँ उपस्थित हो ऐसा आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि कुछ घटनाएँ जीवन से सम्बन्धित होती हैं, उन्हें कोई देख नहीं सकता। अतः पूछताछ करके ही काम चलाना पड़ता है। कई बार लोग इनके बारे में असत्य बोलते हैं, इसीलिए यह विधि पूर्ण विश्वसनीय नहीं हो सकती है।
4. सर्वेक्षण विधि से ऐसी सूचनाएँ प्राप्त नहीं होती, जिनसे तथ्यों का गहराई से अध्ययन हो सके।
5. सर्वेक्षण में अभ्यर्थियों के गलत या सामाजिक रूप से मान्य उत्तर देने की संभावना होती है।
6. सर्वेक्षण विधि में शोधकर्त्ता को अधिक सर्तक, प्रशिक्षित तथा शोध क्षेत्र का जानकार होना चाहिए।

यद्यपि सर्वेक्षण विधि में अनेक त्रुटियाँ व कमियाँ हैं, फिर भी अनुसंधान के क्षेत्र में इसका अपना अलग महत्त्व है। अनेकानेक तात्कालिक समस्याओं पर उचित सूचना तथा तथ्य इसी के माध्यम से प्राप्त किये जा सकते हैं। विभिन्न उपकल्पनाओं का सत्यापन तथा सिद्धान्तों का परीक्षण भी इस विधि द्वारा सम्भव है।

3.3 प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :-

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
7. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं।
8. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
9. शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
10. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का प्रशिक्षुओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
11. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
12. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3.4 चर :-

चर से तात्पर्य वस्तु, घटना अथवा चीज के उन गुणों से होता हैं, जिन्हें मापा जा सकता है।

चर की परिभाषाएँ :–

1. **डी. एमैटो के शब्दों में :–** ''किसी–प्राणी, वस्तु या चीज के मापने योग्य गुणों को चर कहा जाता है।''
2. **गैरट के अनुसार :–** ''चर वह लक्षण या गुण हैं, जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता हैं और यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता है।''

3.5 चर के प्रकारः–

चरों की प्रकृति गुणात्मक न होकर परिणामात्मक होती है। चर दो प्रकार के होते हैं –

1. स्वतंत्र चर
2. आश्रित चर

1. **स्वतंत्र चर :–** स्वतंत्र चर किसी वातावरण में क्रियाशील होता है। और व्यवहार को प्रभावित करता है। स्वतन्त्र चर का मापन किया जाता है और प्रयोग द्वारा उसके प्रभाव का अध्ययन किया जाता हैं तथा आश्रित चर से सह–सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।
2. **आश्रित चर :–** किसी स्वतंत्र चर का प्रभाव जिस चर के आधार पर किया जाता हैं, उसे आश्रित चर कहते हैं जिसका मूल्य स्वतंत्र चर के मूल्य पर आधारित है।

3.5.1 शोध में प्रयुक्त चर :–

1. स्वतंत्र चर :– प्राचार्य की प्रबन्धन शैली
2. आश्रित चरः– शिक्षक एवं प्रशिक्षु की (नेतृत्व क्षमता, समायोजन, व्यावसायिक दक्षता, अनुशासन, महाविद्यालय वातावरण)

3.6 न्यादर्श :–

व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शोध कार्यों में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता है। यद्यपि विज्ञान के विषय में भी न्यादर्श के चयन की समस्या होती हैं तथा जो भी अंश उपलब्ध होता हैं वही जनसंख्या का समग्र रूप में प्रतिनिधित्व करता है। परन्तु समाजिक विषयों में न्यादर्श में चयन में प्रमुख समस्या होती हैं कि किस प्रकार न्यादर्श की इकाईयों का जनसंख्या में से चयन किया जाये, जो उसका प्रतिनिधित्व कर सके। सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता हैं तथा कभी–कभी असम्भव होता है। न्यादर्श विधि शोध–कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन–शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है। न्यादर्श के प्रयोग से शोध परिणामों को अधिक शुद्ध एवं मितव्ययी बनाया जाता है।

3.6.1 न्यादर्श की परिभाषाएँ :– न्यादर्श की परिभाषा अनेक विद्वानों ने निम्न रूप में परिभाषित की है –

1. गुड एवं हैट के अनुसार :– ''एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट हैं सम्पूर्ण समूह का एक निम्नतम प्रतिनिधित्व है।''
2. पी. वी. यंग के अनुसार :– ''एक सांख्यिकीय निर्देशन सम्पूर्ण समूह योग का एक लघुकृत आकार का चित्र है, जिससे कि निदर्शन लिया जाता है।''
3. करलिंगर के अनुसार :– ''किसी जनसंख्या योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता हैं कि व्यक्तियों या वस्तुओं के विस्तृत समूह का एक छोटे आकार का प्रतिनिधि ही प्रतिदर्श हैं, जिसके आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए विश्वसनीय और वैध निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

3.6.2 न्यादर्श के चयन की आवश्यकता :–

1. समय की बचत होती है।
2. मितव्ययी विधि है।
3. अत्यधिक सत्यता का ज्ञान होता है।
4. सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन संभव है।
5. विश्वसनीयता की सम्भावना अधिक रहती है।
6. प्रायोगिक अध्ययन में उपयुक्तता।

3.6.3 न्यादर्श के आवश्यक तत्त्व :–

एक उत्तम न्यादर्श वस्तुत वह प्रक्रिया हैं, जिसके अन्तर्गत प्रतिनिधित्व चुना जाता है। इस प्रतिनिधित्व के माप द्वारा शोध अध्ययन के समय, शक्ति एवं धन की बचत की संभावना होती है। एक उत्तम न्यादर्श के आवश्यक तत्त्व निम्नलिखित है–

1. न्यादर्श अपनी समष्टि के अनुरूप होना चाहिए।
2. प्रतिदर्श की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए।
3. उत्तम प्रकार के न्यादर्श का आधार यादृच्छिक होना चाहिए।
4. न्यादर्श द्वारा सूचना संकलन कार्य प्रत्येक इकाई से यथासम्भव समान परिस्थितियों में ही होना चाहिए।
5. सामान्य ज्ञान, तर्क तथा व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित होना चाहिए।

6. न्यादर्श पक्षपात तथा मिथ्या सुझाव से मुक्त हो।

3.6.4 न्यादर्श के लाभ :– न्यादर्श के लाभ निम्नलिखित है –

1. न्यादर्श के द्वारा सर्वेक्षण की आर्थिक लागत कम हो जाती है।
2. न्यादर्श से वे प्रदत्त भी सम्भव हो पाते हैं जो समग्र के अध्ययन से संभव नहीं हो पाते।
3. प्रदत्तों व प्रतिक्रियाओं का सम्पादन व जाँच सरल हो जाती है।
4. न्यादर्श में व्यक्तियों की संख्या कम होने से परीक्षणों के प्रशासन में सुविधा रहती है।
5. प्रयोगात्मक अध्ययन में न्यादर्श का अधिक महत्व है।
6. न्यादर्श के आधार पर एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण तथा चित्रात्मक प्रदर्शन सम्भव व सरल होता है तथा निष्कर्षों की विवेचना सम्भावना सिद्धान्त के आधार पर की जा सकती है।

3.6.5 न्यादर्श की सीमाएँ :– न्यादर्श के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएँ निम्नलिखित रूप में हैं –

1. न्यादर्श पद्धति से कभी–कभी न्यादर्श त्रुटि का पूर्व कथन सम्भव नहीं होता है।
2. कहीं–कहीं समग्र जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। वहाँ न्यादर्श से काम नहीं चलता है।
3. इसके अलावा न्यादर्श में पक्षपात की संभावना बनी रहती है।
4. जनसंख्या के विषमजातीय होने पर न्यादर्श का चयन करना कठिन होता है।

5. जनसंख्या का स्वरूप सीमित होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती है।

6. न्यादर्श एक जटिल वैज्ञानिक पद्धति है। इसके लिए पर्याप्त तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

7. न्यादर्श में समग्र के सही प्रतिनिधित्व की सदैव आवश्यकता बनी रहती है। शोधकर्त्ता की समग्र की यथेष्ट जानकारी के अभाव शोधकर्त्ता की समग्र की विशेषताओं की उपेक्षा तथा न्यादर्श प्रविधियों के पर्याप्त ज्ञान के अभाव के कारण न्यादर्श में समग्र की पर्याप्त विशेषताओं का समावेश नहीं हो सकता है।

3.6.6 न्यादर्श की विधियाँ :– न्यादर्श में प्राप्त करने की अनेक विधियाँ विकसित की गई है। न्यादर्श में प्रतिनिधि एवं पर्याप्तता का गुण लेने के लिए न्यादर्श को विशिष्ट विधियों द्वारा करना चाहिए। न्यादर्श की मुख्य दो विधियाँ प्रचलित हैं –

1. सम्भाव्यता न्यादर्श
2. असम्भाव्यता न्यादर्श

न्यादर्श की विधियाँ

1. सम्भाव्यता न्यादर्श	2. असम्भाव्यता न्यादर्श
(i) यादृच्छिक न्यादर्श	(i) अंश न्यादर्श
(ii) स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श	(ii) सौद्देश्य न्यादर्श
(iii) गुच्छ यादृच्छिक न्यादर्श	(iii) आकस्मिक न्यादर्श

(iv) दिशा न्यादर्श

(v) क्रमबद्ध न्यादर्श

3.6.7 शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–शोधकर्त्री द्वारा शोध के उद्देश्यों व परिकल्पनाओं के आधार पर अलवर जिले की बहरोड़ तहसील के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के बी.एड. के शिक्षक प्रशिक्षक व प्रशिक्षुओं का यादृच्छिक विधि से न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी. एड. शिक्षक प्रशिक्षक व प्रशिक्षु)

कुल न्यादर्श

60

20 शिक्षक प्रशिक्षक | 40 प्रशिक्षु

3.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

3.7.1 उपकरण :–

किसी भी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एवं अज्ञात तथ्यों का संकलन करने में सहायक साधनों को शोध उपकरण कहते हैं। अनुसंधान हेतु अनेक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। उपकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए सुखिया एवं मल्होत्रा ने लिखा है – ''किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एवं अज्ञात दत्त संकलन के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दत्त संकलित करने हेतु कई यंत्रों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते है।''

विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण प्रस्तुत किए जाते है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्त्ता इन उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

3.7.2 उपकरण के प्रकार :–

1. मानकीकृत उपकरण
2. अमानकीकृत उपकरण या स्वनिर्मित उपकरण

1. **मानकीकृत उपकरण :–** मानकीकृत उपकरण अपेक्षाकृत अधिक मान्य व वैज्ञानिक होते है। ये वे साधन हैं जिन्हें परीक्षण द्वारा मनोवैज्ञानिक, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधान संस्थाओं आदि के द्वारा अनेक अन्वेषणों की सहायता से बड़े समूह पर प्रशासित किया जाता हैं और इनकी वैधता, विश्वसनीयता, मानकों को ज्ञात कर लिया जाता है। इनकी प्रशासन प्रक्रिया सुनिश्चित होती है।
2. **अमानकीकृत या स्वनिर्मित प्रश्नावली :–**अमानकीकृत उपकरणों का निर्माण शोधकर्त्ता द्वारा समस्या के अनुसार स्वयं अपने अनुभव, सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन, सम्बन्धित उद्देश्यों तथा अध्यापकों के सहयोग के आधार पर करते हैं। इन उपकरणों के निर्माण के बाद वह उसकी विश्वसनीयता, वैधता ज्ञात करता है। तत्पश्चात् उन्हें प्रयोग में लाता है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित परीक्षण (प्रश्नावली) बनाया गया है। जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली

का प्रशिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

3.7.3 प्रश्नावली :– किसी भी अनुसंधान में आंकड़ों के संकलन में यह महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें अनेक प्रश्नों का समूह होता है। प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची हैं जो अध्ययन समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती हैं और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाईयों से तथ्यों का संकलन करके अध्ययन समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

3.7.4 प्रश्नावली की परिभाषाएँ :– प्रश्नावली की परिभाषा अनेक विद्वानों ने निम्न रूप में परिभाषित की हैं –

1. **गुड तथा हॉट (1952) के अनुसार :–** ''सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से हैं, जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है। जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है।
2. **सिन–पाओ यंग (1953) के अनुसार :–** ''अपने सरलतम रूप में प्रश्नावली प्रश्नों की वह अनुसूची हैं ,जिसे कि अनुसूचित या सर्वेक्षण प्रतिदर्श के रूप में चुने हुए व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेजा जाता है। इसकी सहायता से बड़े और विस्तृत लोगों के समूहों से शीघ्र और सरलता से सूचना एकत्र की जाती है।''
3. **वान डैलेन के अनुसार :–** ''प्रश्नावली एक उपकरण हैं जो शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वालों के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों व क्रियाओं के बारे में तथा अभिवृत्ति व मत को जानने के लिए व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है।''

3.7.5 प्रश्नावली की विशेषताएँ :– प्रश्नावली की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

- प्रश्नावली में प्रश्नों की भाषा एवं शब्दावली स्पष्ट होती है।
- प्रश्नावली में प्रश्नों के उत्तर सूचनादाता को लिखना पड़ता है।
- प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार से उत्पन्न दोषों से बचा जा सकता है।
- पर्याप्त समय मिलने से व्यक्ति सोच–समझकर उत्तर लिख सकते हैं।
- यह कम खर्चीली व सरल साधन है।
- अच्छी प्रश्नावली के प्रश्न वस्तुनिष्ठ होते हैं।
- प्रश्नावली द्वारा शीघ्र सूचना प्राप्त होती है।

3.7.6 प्रश्नावली की आवश्यकता/लाभ :– अन्य मनोवैज्ञानिक उपकरणों की तुलना में प्रश्नावली में निम्न गुणों के कारण इसका प्रयोग बहुतायत होता है।

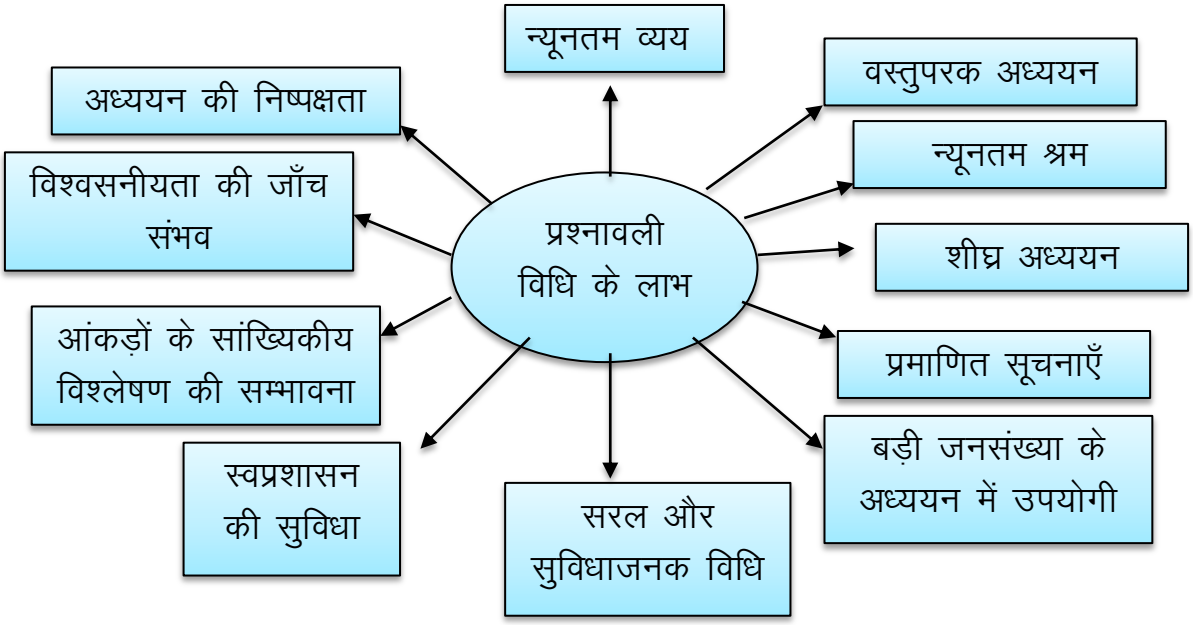

प्रश्नावली की सीमाएँ :– प्रश्नावली के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएँ व्याप्त हैं जो निम्नलिखित हैं –

1. शोधकर्त्ता का पक्षपात पूर्ण दृष्टिकोण
2. निर्देशन के लिए अनुपयोगी
3. गहन व विस्तृत अध्ययन के लिए अनुपयोगी
4. प्रत्येक स्तर के अनुरूप प्रश्नों की रचना असम्भव
5. विभिन्न व्यावहारिक कठिनाईयाँ

3.8 उपकरण का विवरण एवं प्रशासन :–

शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव मापनी (परीक्षण) का प्रयोग किया है।

3.8.1 परीक्षण विवरण :– प्रस्तुत लघुशोध में उपकरण स्वनिर्मित है। इस उपकरण के माध्यम से प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। इस परीक्षण में गुणवत्ता उन्नयन को प्रभावित करने वाले 5 आयाम बनाये गये हैं। प्रत्येक आयाम में 6.6 प्रश्न रखे गये हैं जिनमें प्रशिक्षुओं से सम्बन्धित प्रश्नों की संख्या 30 हैं तथा शिक्षकों से सम्बन्धित प्रश्नों की संख्या 30 हैं। कुल प्रश्नों की संख्या 60 हैं।

इन आयामों को इस प्रकार बताया गया हैं –

1. शिक्षक :–

(i)	नेतृत्व क्षमता	प्रश्न – 6	प्रत्येक प्रश्न का 5 अंक है।
(ii)	समायोजन	प्रश्न – 6	
(iii)	व्यावसायिक दक्षता	प्रश्न – 6	

(iv)	वातावरण	प्रश्न – 6	
(v)	अनुशासन	प्रश्न – 6	
		कुल – 30	अंक = 150

2. प्रशिक्षु :–

(i)	नेतृत्व क्षमता	प्रश्न – 6	प्रत्येक प्रश्न का 5 अंक है।
(ii)	समायोजन	प्रश्न – 6	
(iii)	व्यावसायिक दक्षता	प्रश्न – 6	
(iv)	वातावरण	प्रश्न – 6	
(v)	अनुशासन	प्रश्न – 6	
		कुल – 30	अंक = 150

3.8.2 प्रशासन :– प्रस्तुत शोध प्रबंध शैली परीक्षण का एक प्रकार है। परीक्षण से सम्बन्धित निर्देशक परीक्षक को इसका ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षकों व प्रशिक्षुओं को परीक्षण से पूर्व सब निर्देशों को सविस्तार समझा देना चाहिए जो कि परीक्षण में दिए गये है। पूरे परीक्षण को एक ही बार में पूरा करना चाहिए।

अंकीकरण :–

इस प्रश्नावली के प्रत्येक आयाम में शिक्षक व प्रशिक्षुओं से सम्बन्धित 6–6 प्रश्न हैं तथा कुल प्रश्न 60 है। प्रत्येक प्रश्न का 5 अंक निर्धारित है। नकारात्मक प्रश्न के लिए पूर्णतया सहमत पर 1 अंक, सहमत पर 2 अंक, अनिश्चित पर 3 अंक, असहमत पर 4 अंक तथा पूर्णतया असहमत पर 5 अंक दिया जायेगा। सकारात्मक प्रश्न के लिए पूर्णतया सहमत पर 5 अंक, सहमत पर 4 अंक, अनिश्चित पर 3 अंक,

असहमत पर 2 अंक तथा पूर्णतया असहमत पर 1 अंक दिया जायेगा। प्रत्येक आयाम में पाँच रेटिंग स्केल पूर्णतया सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतया असहमत वाले प्रश्न रखे गये है। शिक्षक परीक्षण से सम्बन्धित कुल 30 प्रश्नों में से 22 प्रश्न सकारात्मक (प्रश्न संख्या 1, 2, 3, 6, 7, 8, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 19, 20, 21, 22, 24, 25, 26, 27, 29, 30) हैं तथा 8 नकारात्मक प्रश्न (4, 5, 9, 12, 17, 18, 23, 28) हैं प्रशिक्षु परीक्षण से सम्बन्धित कुल 30 प्रश्नों में 21 सकारात्मक प्रश्न (1, 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 13, 14, 15, 16, 19, 20, 21, 22, 23, 25, 28, 29) है तथा 9 नकारात्मक प्रश्न (6, 11, 12, 17, 18, 24, 26, 27, 30) है।

प्रविधियाँ :–

प्रविधि से तात्पर्य खास तरीके से सूचनाएँ प्राप्त करने से है। शोधकर्त्ता में विशेष योग्यता होने पर ही पूर्ण एवं सार्थक सूचनाएँ एकत्र कर सकता हैं अथवा नहीं। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधि को चुना है।

3.9 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

परीक्षण की सहायता से संग्रहित किये गये आँकड़ों से प्राप्तत सूचनायें जटिल, असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है। उचित विवेचना के लिए सामग्री को संगठित करना आवश्यक होता है। इसके लिए सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाना है।

सांख्यिकी प्रविधि शोध को आधार प्रदान करती है। किसी भी परीक्षण के निष्कर्ष के लिए सांख्यिकी की आवश्यकता होती है। ये अनुसंधानकर्त्ता की परिकल्पनाओं का परीक्षण करती है। जिसके लिए परिकल्पनाएँ कहाँ तक सत्य है। ये शोध के लिए एक सुनिश्चित योजना तैयार करती है। और प्राप्त तथ्यों का

सारांश निकालकर उसे वास्तविक विचार व्यक्त करने के योग्य बना देती है। आज के युग में हम मनुष्य को विभिन्न क्षमताओं के विकास को भली प्रकार से मापन करने में सक्षम हो जाते हैं। इसी के आधार पर मापन में सांख्यिकी का अपना महत्व है।

3.9.1 सांख्यिकी का अर्थ एवं परिभाषा :– सांख्यिकी शब्द को अंग्रेजी भाषा में Statistic कहा जाता है। स्टेटिक्स लेटिन भाषा के शब्द स्टेट्स या इटली भाषा के शब्द स्टेटिस्टा से बना है। इसका प्रयोग आरम्भ में जन्म–मरण की संख्याओं के विवरण का लेखा रखने के लिए किया गया था। परन्तु धीरे–धीरे यह राजनीतिक विषय ही नहीं रहा। इसका प्रयोग राज्य की आर्थिक व सामाजिक समस्याओं व परिस्थितियों तक फैल गया। वर्तमान में सांख्यिकी का प्रयोग विज्ञान, गणित, शिक्षा मनोविज्ञान अर्थशास्त्र आदि सभी ज्ञान के क्षेत्रों में होता है।

सांख्यिकी की परिभाषाएँ :–

1. **प्रो. बाउले के अनुसारः–** ''सांख्यिकी एक ऐसा शास्त्र है जो सामाजिक जीवन रचना की क्रियाओं का उसकी समस्त प्रवृत्तियों में अध्ययन करता है।''

2. **विलियम किंग के अनुसार :–** ''सांख्यिकी संग्रहित तथ्यों के विश्लेषण अथवा अनुमान के संकलन द्वारा प्रदत्त सामूहिक या सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने का ढंग है।''

3. **फर्ग्यूसन के अनुसार :–** ''सांख्यिकी का सम्बन्ध सर्वेक्षणों और परीक्षणों द्वारा प्राप्त होने वाली सामग्री के संकलन, वर्गीकरण और व्याख्या से है।

3.9.2 सांख्यिकी की आवश्यकता :– सांख्यिकी का ज्ञान प्रत्येक शोधकर्त्ता को होना आवश्यक हैं –

1. मार्गदर्शन की प्रक्रिया का आधार सांख्यिकी होता है।
2. प्रयोगों तथा शोध कार्य सांख्यिकी का प्रयोग के अभाव में विश्वसनीय एवं प्रमाणित नहीं होता है। अनुसंधान तथा प्रयोग की व्याख्या के लिए सांख्यिकी का ज्ञान होना आवश्यक है।

3.9.3 सांख्यिकी का महत्व :– शोध कार्य में सांख्यिकी का महत्व निम्नलिखित है। –

1. साख्यिकी में किसी परीक्षण के पद विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। इसके प्रत्येक पद का विभेदकारी मान और सरलतम मान तथा कठिनतम मान निकाला जाता है।
2. सांख्यिकी के द्वारा परीक्षण की वैधता एवं विश्वसनीयता का पता चलता है।
3. शिक्षा समस्याओं की व्यवस्था, निपुणता की तुलना इन सांख्यिकी मापों के द्वारा की जाती है।
4. सांख्यिकी के द्वारा एक का सम्बन्ध अन्य विषयों के साथ निकालकर यह जान सकते हैं कि विषयों में आपस में कितनी समानताएँ है।

3.9.4 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकी के अन्तर्गत प्रतिशत परीक्षण का प्रयाग किया है।

3.9.5 प्रतिशत :– जब प्रत्यक्ष रूप से विचार या अन्य विशेषताओं का मापन करना असम्भव अथवा कठिन हो तो प्रतिदर्श में प्रतिशत प्रापत करने

के आधार पर मापन करना सुगम हो जाता है। चूंकि प्राप्त प्रतिशत व्यवहार और विचार तथा अन्य विशेषताओं को सही प्रकार बताती है।

प्रतिशत ज्ञात करने का सूत्र :–

$$\textbf{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{कुल योग}} \times 100$$

% = प्रतिशत

चतुर्थ अध्याय
प्रदत्तों का वर्गीकरण, विलेशषण एवं व्याख्या

"अनुसंधान के शोध कार्य का विश्लेषण एवं समस्त क्रियाकलापों के परिणाम जो अनुसंधान योजना के अन्तर्गत मुख्य प्रक्रिया है दत्त संकलन एक महत्वपूर्ण साक्ष्य का कारण है।"

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :-

प्रस्तुत अध्याय में संग्रहित प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सन्दर्भ में किया गया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षु की गुणवत्ता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

इस अध्ययन हेतु स्वनिर्मित (प्रश्नावली) परीक्षण का प्रयोग किय गया है।

शोध अध्ययन हेतु 60 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक व प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के 20 शिक्षक तथा 40 बी. एड. प्रशिक्षुओं को लिया गया है।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के चार महाविद्यालयों में से प्रत्येक महाविद्यालय के शिक्षक तथा 10 बी.एड. प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है।

4.2 तथ्यों का वर्गीकरण

परिकल्पना 1.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.1

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
20	600	498	83%

तालिका नं. 4.1 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का कुल योग 600 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 498 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 83% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों ने नेतृत्व की योग्यता, क्षमता एवं लोकतांत्रिक दृष्टिकोण पाया गया।

परिकल्पना 2.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.2

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
20	600	489	81.5%

तालिका नं. 4.2 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों की समायोजन का कुल योग 600 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 489 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 81.5% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों प्रबंधन शैली में शिक्षकों की भागीदारी व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखते है।

परिकल्पना 3.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.3

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
20	600	507	84.5%

तालिका नं. 4.3 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता का कुल योग 600 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 507 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 84.5% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्य शिक्षकों के लिए व्यावसायिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा सेवारत कार्यक्रम हेतु प्रोत्साहित करते है।

परिकल्पना 4.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों से निर्मित्त महाविद्यालय वातावरण का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.4

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
20	600	479	79.83%

तालिका नं. 4.4 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों के महाविद्यालय वातावरण का कुल योग 600 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 479 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 79.83% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों से महाविद्यालय वातावरण का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की शैली से निर्मित वातावरण शांत स्वच्छ व शिक्षण के अनुकूल पाया गया।

परिकल्पना 5.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.5

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
20	600	532	88.66%

तालिका नं. 4.5 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों के अनुशासन का कुल योग 600 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 532 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 88.66% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्य समय का पाबंद, आदर्श, कार्य से पूर्ण योजनाओं का निर्माण, नियमों का पालन करने वाले पाए गए।

परिकल्पना 6.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.6

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
20	3000	2505	83.5%

तालिका नं. 4.6 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन का कुल योग 3000 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 2505 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 83.5% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों में नेतृत्व क्षमता, समायोजन व्यावसायिक दक्षता, शिक्षण के अनुकूल वातावरण व अनुशासन इत्यादि गुणों से परिपूर्ण है।

परिकल्पना 7.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.7

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
40	1200	1053	87.75%

तालिका नं. 4.7 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता का कुल योग 1200 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 1053 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 87.75% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों द्वारा विभिन्न प्रयोजनाओं का निर्माण तथा विभिन्न कार्यक्रमों व क्रियाओं का संचालन किया जाता है। जिसका अनुकरण प्रशिक्षुओं में नेतृत्व क्षमता का विकास करने में सहायक होता है।

परिकल्पना 8.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.8

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
40	1200	1004	83.66%

तालिका नं. 4.8 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि प्रशिक्षुओं के समायोजन का कुल योग 1200 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 1004 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 83.66% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की प्रबंधन शैली में परामर्श, प्रशिक्षुओं की भागीदारी व सहयोग की भावना पायी गयी। जो उन्हें शैक्षिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से समायोजित होने में सहायक होती है।

परिकल्पना 9.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.9

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
40	1200	943	77.83%

तालिका नं. 4.9 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षता का कुल योग 1200 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 943 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 77.83% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्य व्यावसायिक गुण अपनाते हुए शैक्षिक दर्शन व व्यावसायिक शिक्षा की जानकारी रखते है। जो प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक निष्ठा के विकास में सहायक होती है।

परिकल्पना 10.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का प्रशिक्षुओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.10

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
40	1200	990	82.5%

तालिका नं. 4.10 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि प्रशिक्षुओं पर वातावरण का कुल योग 1200 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 990 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 82.5% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली से महाविद्यालय वातावरण का प्रशिक्षुओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित वातावरण में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की सुविध्धा व शिक्षण के अनुकूल पाए गए।

परिकल्पना 11.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.11

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
40	1200	918	76.5%

तालिका नं. 4.11 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि प्रशिक्षुओं के अनुशासन का कुल योग 1200 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 918 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 76.5% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों को प्रबधन शैली के समय के प्रति पाबंद, कार्य योजनाएँ सभी के प्रति सम्मान इत्यादि गुण पाए गए जो प्रशिक्षुओं में अनुशासन की भावना का विकास करने में सहायक होते है।

परिकल्पना 12.

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका नं. 4.12

न्यादर्श	नेतृत्व क्षमता का योग	प्राप्तांक	प्रतिशत
40	6000	4908	81.8%

तालिका नं. 4.12 के अवलोकन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता हैं कि प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन का कुल योग 6000 होता हैं तथा उनमें से प्राप्तांक 4908 प्राप्त हुआ है। यह कुल अंकों के योग का 81.8% है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की प्रबंधन शैली में नेतृत्व क्षमता, समायोजन, व्यावसायिक दक्षता, वातावरण व अनुशासन इत्यादि गुण पाए गए।

ग्राफ संख्या 4.1

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

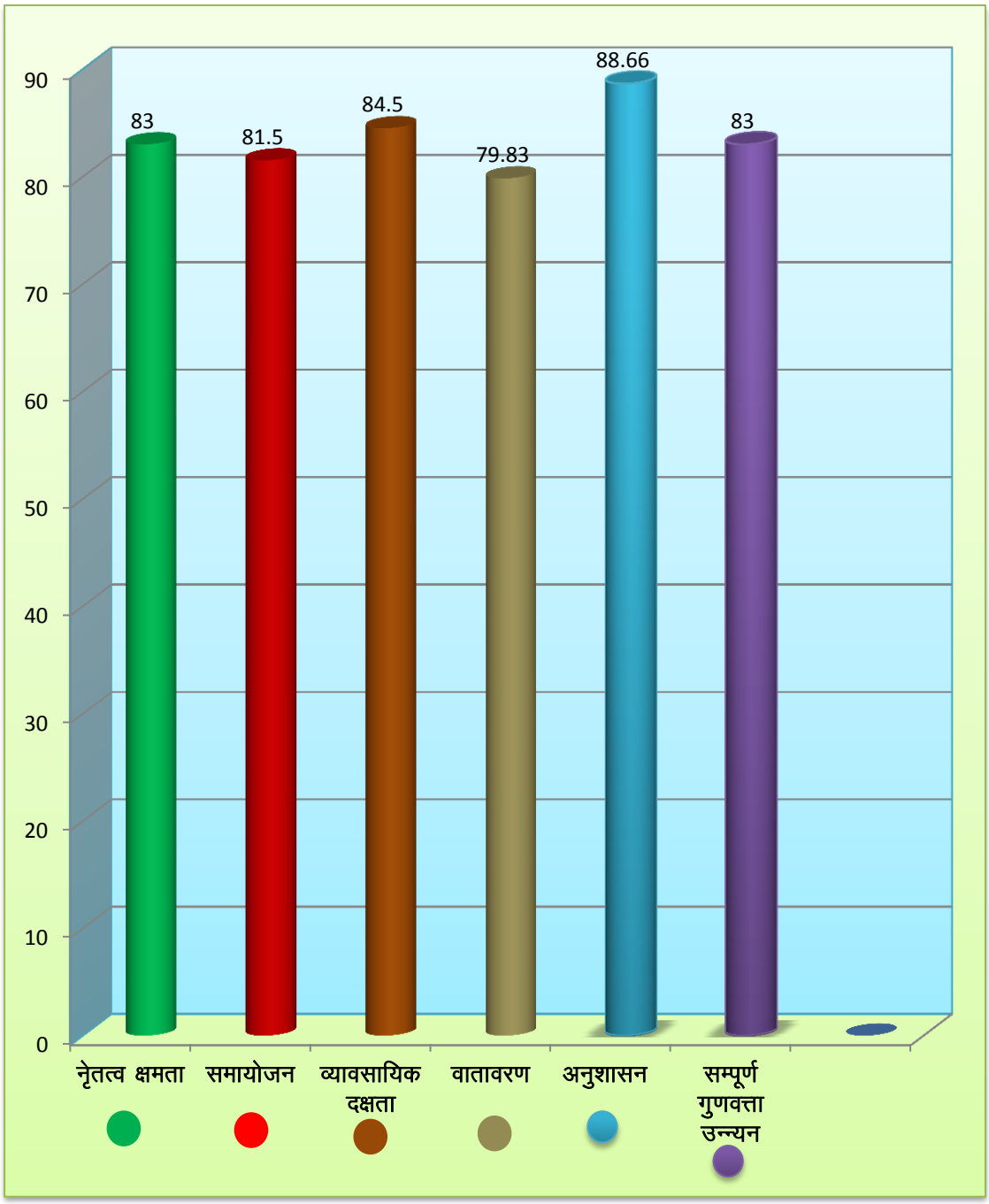

ग्राफ संख्या 4.2

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य की प्रबंधन शैली द्वारा प्रशिक्षुओं की गुणवत्ता उन्नयन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –

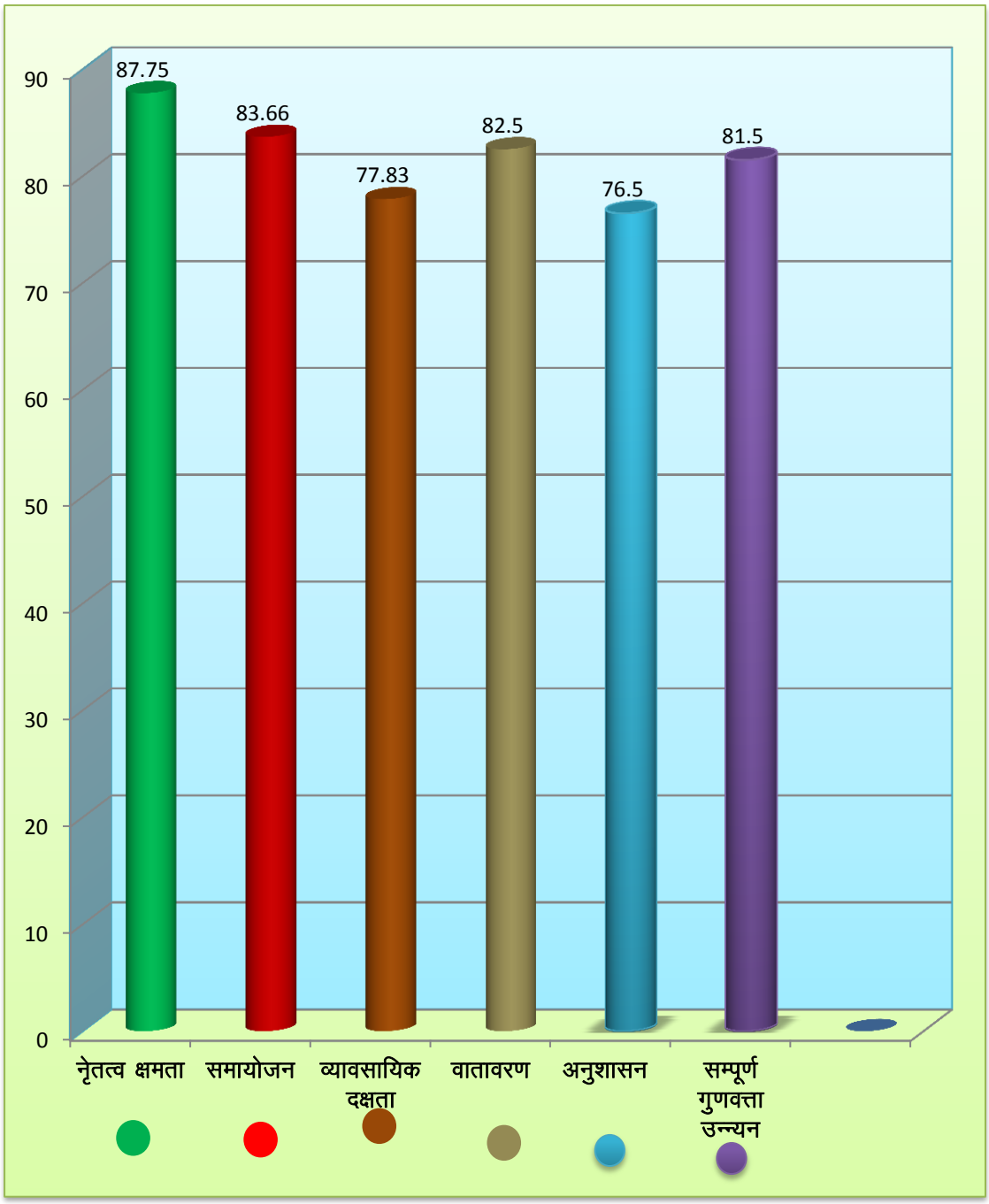

पंचम अध्याय
शोध सारांश एवं निष्कर्ष

"अध्ययनों के सम्पूर्ण परिणामों की रूचि रखने वाले व्यक्तियों के समक्ष पर्याप्त विचार-विमर्श करने और उनके परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षो की वैधता स्वयं निर्धारित करने में समर्थ हो सकें।"

.....अमेरिकन मार्केटिंग सोसायटी

पंचम अध्याय

शोध सारांश एवं निष्कर्ष

5.1 शोध सारांश :-

5.1.1 प्रस्तावना –

शिक्षा में प्रबंध या शैक्षिक प्रबन्ध वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित की जाती है। जिनमें मानवीय स्त्रोत अपनी योग्यता तथा क्षमता का पूरा–पूरा प्रदर्शन कर सकें। शिक्षा में प्रबन्ध शिक्षा का गतिशील अंग है। शिक्षा दर्शन शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित करता है। जबकि 'शिक्षा में प्रबन्ध' सभी तथ्यों को कार्य रूप में परिणत करता है।

स्कॉट के अनुसार – 'व्यवस्था का अन्तिम उद्देश्य विवाद को कम करना है। दूसरे शब्दों में व्यवस्था द्वारा अनिश्चितता को कम करके निश्चितता तथा स्थायित्व में वृद्धि की जाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रबन्धन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि प्रबंधन ही उस क्षेत्र के अनुशासन और शैक्षिक गुणवता उन्नयन का आधार होता है। अतः प्रबन्धक का मुख्य कार्य संस्था के निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति शिक्षक व विद्यार्थियों की गुणवता उन्नयन का प्रयास करना है। इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक प्रबन्धक अपने प्रबन्धनात्मक ढाँचे को इस प्रकार ढाँले कि इन लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकें।

संस्थाओं में प्राचार्य एक नेता हैं महाविद्यालय की समग्र गतिविधियों उसी पर आधारित होती है। प्राचार्य अपने सफल नेतृत्व व्यक्तिगत अनुभव, योग्यता तथा कार्यक्षमता के द्वारा महाविद्यालय को निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है।

डॉ. जसवन्त सिंह के अनुसारः–

शिक्षा की प्रक्रिया में प्रधानाध्यापक का विशेष महत्व है कि विद्यालय पद्धति की उसी की कुशलता एवं संतुलनात्मक योग्यता पर निर्भर करता है। प्राचार्य अपनी उच्च कार्य दक्षता से महाविद्यालय वातावरण को लाभान्वित करता है। लोकतांत्रिक वातावरण में अध्यापक अधिक कार्यात्मक संतुष्टि अनुभव करते है। किसी भी महाविद्यालय में प्रबन्धात्मक प्रणाली के संचालन में शिक्षकों व प्रशिक्षकों की भागीदारी और योगदान पर प्राचार्य की नेतृत्व शैली का भी प्रभाव पड़ता है। प्राचार्य की प्रबन्ध शैली से महाविद्यालय में विशेष प्रकार का वातावरण तथा शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर प्रभाव पड़ता है।

5.1.2 समस्या का औचित्यः–

शोधकत्री ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली को ही केन्द्र बिन्दु इसलिए माना क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र, समाज और संगठन को प्रभावी नेतृत्व की आवश्यकता होती है। कुशल नेतृत्व जहाँ इन्हें नई दिशा देकर प्रगति एवं उपलब्धियों की ऊचाई पर ले जाता है वहीं अकुशल नेतृत्व इनके पराभव व पतन के लिए उत्तरदायी होती है। कुशल नेतृत्व में छोटे राष्ट्र भी संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लेते है। वही अकुशल नेतृत्व में बड़े से बड़ा समूह मानव विकास का आधार है। शिक्षण प्रक्रिया की सफलता उत्तम प्रबंधन पर निर्भर करती है। यदि प्रबंधक निरंकुश हैं तो शिक्षा की प्रक्रिया में अवरोध आयेंगे। यदि वह अधिनायकवादी

है तो एक ही व्यक्ति या संस्था का वर्चस्व रहेगा। यदि मुक्त है तो अराजकता की संभावना बढ़ेगी। इसलिए शिक्षण संस्थाओं की सफलता उसके प्रबंधन पर निर्भर करती है। अतः किसी भी शैक्षणिक संस्था की सफलता शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन संस्था के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली पर ही निर्भर करती है।

शोधकर्त्री ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रार्चा की प्रबन्धन शैली को ही अपने शोध कार्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु इसलिए माना हैं क्योंकि शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया की सफलता उत्तम प्रबन्धन पर निर्भर है। यदि प्रबन्धन निरंकुश है तो शिक्षा की प्रक्रिया में अवरोध आयेंगे। यदि वह अधिनायकवादी है तो एक व्यक्ति या संस्था का वर्चस्व रहेगा। यदि मुक्त है तो अराजकता की संभावना बढ़ेगी। अतः किसी भी शैक्षणिक संस्था की सफलता प्रशिक्षुओं व शिक्षकों की गुणवत्ता उन्नयन संस्था के प्राचार्य की प्रबंधन शैली पर ही निर्भर रहता है।

5.1.3 समस्या कथन –

"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन"

5.1.4 शोध के उद्देश्य –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के समायोजन का अध्ययन करना।

3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के व्यावसायिक दक्षता का अध्ययन करना।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के अनुशासन का अध्ययन करना।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं के महाविद्यालयी वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

5.1.5 शोध की परिकल्पनाएँ –

परिकल्पना शब्द अंग्रेजी के Hypothesis का हिन्दी रूपान्तर है Hypothesis शब्द Hypo+thesis से मिलकर बना है। Hypo का अर्थ हैं संभावित उत्तर या जिसकी पुष्टि की जाए और thesis का अर्थ होता है समस्या के समाधान का कथन। अतः परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ हैं उस संभावित कथन से हैं जो समस्या के समाधान को प्रस्तुत करता है।

5.1.6 शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाऐं –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों नेतृत्व की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की व्यवसायिक क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की गुणवता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
7. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
8. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
9. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की व्यवसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
10. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का प्रशिक्षुओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
11. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
12. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

5.1.7 शोध विधि –

शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

5.1.8. न्यादर्श –

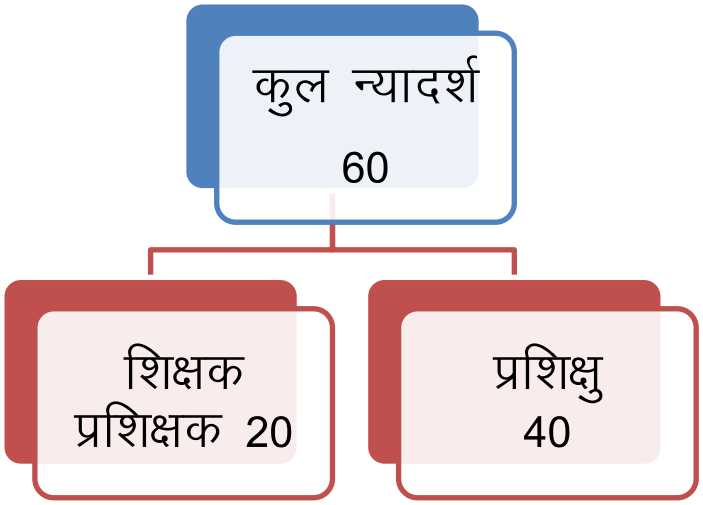

5.1.9 चर :–

चर दो प्रकार के होते है :–

1. स्वतंत्र चर ÷ प्राचार्य की प्रबन्धन शैली

2. आश्रित चर ÷ शिक्षक प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षुओं (नेतृत्व क्षमता, समायोजन, व्यावसायिक दक्षता, अनुशासन, वातावरण)

5.1.10 शोध अध्ययन के स्त्रोत :–

शोध अध्ययन हेतु तथ्य संकलन के लिए निम्न स्त्रोत का प्रयोग किया जाएगा।

1. प्राथमिक स्त्रोत

2. द्वितीयक स्त्रोत

1. **प्राथमिक स्त्रोत :–** इसमें शोधकर्त्री द्वारा स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर तथ्यों का संकलन किया गया।

2. **द्वितीयक स्त्रोत :–** पाठ्य – पुस्तकों के रूप में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में हुए अनुसंधानों का सारांश, विश्व कोष, शोधपत्र – पत्रिकाओं का उपयोग किया गया।

5.1.11 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावाली का प्रयोग किया गया हैं।

5.1.12 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी में प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{कुल योग}} \times 100$$

5.2 प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष :–

1. परिकल्पना संख्या 1 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों ने नेतृत्व की योग्यता, क्षमता एवं लोकतांत्रिक दृष्टिकोण पाया गया।
2. परिकल्पना संख्या 2 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों प्रबंधन शैली में शिक्षकों की भागीदारी व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखते है।

3. परिकल्पना संख्या 3 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्य शिक्षकों के लिए व्यावसायिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा सेवारत कार्यक्रम हेतु प्रोत्साहित करते है।
4. परिकल्पना संख्या 4 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की शैली से निर्मित वातावरण शांत स्वच्छ व शिक्षण के अनुकूल पाया गया।
5. परिकल्पना संख्या 5 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली के अनुशासन का शिक्षकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्य समय का पाबंद, आदर्श, कार्य से पूर्ण योजनाओं का निर्माण, नियमों का पालन करने वाले पाए गए। क्योंकि प्राचार्य समय का पाबंद, आदर्श, कार्य से पूर्ण योजनाओं का निर्माण, नियमों का पालन करने वाले पाए गए।
6. परिकल्पना संख्या 6 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों की गुणवता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों में नेतृत्व क्षमता, समायोजन व्यावसायिक दक्षता, शिक्षण के अनुकूल वातावरण व अनुशासन इत्यादि गुणों से परिपूर्ण है।

7. परिकल्पना संख्या 7 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं की नेतृत्व क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों द्वारा विभिन्न प्रयोजनाओं का निर्माण तथा विभिन्न कार्यक्रमों व क्रियाओं का संचालन किया जाता है। जिसका अनुकरण प्रशिक्षुओं में नेतृत्व क्षमता का विकास करने में सहायक होता है।
8. परिकल्पना संख्या 8 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की प्रबंधन शैली में परामर्श, प्रशिक्षुओं की भागीदारी व सहयोग की भावना पायी गयी। जो उन्हें शैक्षिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से समायोजित होने में सहायक होती है।
9. परिकल्पना संख्या 9 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्य व्यावसायिक गुण अपनाते हुए शैक्षिक दर्शन व व्यावसायिक शिक्षा की जानकारी रखते है। जो प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक निष्ठा के विकास में सहायक होती है।
10. परिकल्पना संख्या 10 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली से निर्मित महाविद्यालय वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

क्योंकि प्राचार्यों की प्रबंधन शैली से निर्मित वातावरण में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की सुविध्धा व शिक्षण के अनुकूल पाए गए।

11. परिकल्पना संख्या 11 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं के अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों को प्रबधन शैली के समय के प्रति पाबंद, कार्य योजनाएँ सभी के प्रति सम्मान इत्यादि गुण पाए गए जो प्रशिक्षुओं में अनुशासन की भावना का विकास करने में सहायक होते है।

12. परिकल्पना संख्या 12 के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्राचार्यों की प्रबंधन शैली में नेतृत्व क्षमता, समायोजन, व्यावसायिक दक्षता, वातावरण व अनुशासन इत्यादि गुण पाए गए।

5.3 शैक्षिक निहितार्थ :–

किसी भी शोध कार्य को तभी सफल माना जाता है जब वह शिक्षा के क्षेत्र में , समाज तथा राष्ट्र के लिए योगदान प्रदान करने वाला हो। प्रस्तुत शोध अध्ययन "शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण किया गया है इसमें प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का प्रभाव शिक्षकों व प्रशिक्षकों की गुणवता उन्नयन पर पड़ता हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन से जो तथ्य प्रकाश में आए हैं, उनके आधार पर प्राप्त निष्कर्षों के शैक्षिक अनुप्रयोग निम्नलिखित हो सकते हैं–

I. प्रस्तुत शोध के अध्ययन द्वारा शिक्षक का स्थान कक्षा–कक्ष में एक नेता के समान ही होता है। उसके द्वारा ही अपनी कक्षा का उचित प्रबन्ध कर कक्षा को संतुलित व अनुशासित किया जा सकता हैं।

II. इस अध्ययन के द्वारा शिक्षण कार्य करवाते समय पूछताछ अन्तः क्रिया को स्थान देना चाहिए जिससे प्रशिक्षु पूर्णतः समायोजन कर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

III. प्रस्तुत शोध के अध्ययन द्वारा प्राचार्य की प्रबंधन शैली का शिक्षकों की कार्यशैली पर प्रभाव पड़ता है तथा शिक्षण कार्य में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

IV. इस शोध अध्ययन के द्वारा प्रशिक्षु समय–सारणी का निर्माण करके अपनी दिनचर्या, शिक्षण नियोजन को सुव्यवस्थित कर सकता हैं।

V. इस अध्ययन द्वारा प्रशिक्षु में नेतृत्व क्षमता का विकास होगा जिससे उसमें सामुहिकता, सहिष्णुता, अनुशासन व समायोजन की भावना विकसित होगी।

VI. प्रस्तुत शोध द्वारा प्रशिक्षु निरीक्षण – पर्यवेक्षण द्वारा स्वयं अपनी गतिविधियों का मूल्यांकन कर सकते हैं।

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव :–

कोई भी शोध कभी स्वयं अपने आप में पूर्ण व अन्तिम नहीं होता हैं। प्रस्तुत समस्या के विभिन्न पहलुओं पर भावी शोधकर्ता हेतु सुझाव के रूप दिए जा रहें हैं

1. यह शोध विद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर भी किया जा सकता है।

2. यह शोध कार्य सरकारी व निजी महाविद्यालयों के प्राचार्यों की प्रबंधन शैली का तुलनात्मक अध्ययन हेतु भी किया जा सकता हैं।
3. यह शोध कार्य 20 से अधिक प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली का शिक्षकों व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर प्रभावशीलता जानने हेतु किया जा सकता हैं।
4. यह शोध राजस्थान के अन्य जिलों के प्राचार्यों की प्रबन्धन शैली के सम्बन्ध में भी किया जा सकता हैं।
5. यह शोध कार्य 40 से अधिक प्रशिक्षुओं पर प्राचार्यों की प्रबन्ध शैली की प्रभावशीलता हेतु किया जा सकता हैं।

5.5 उपसंहार :–

प्रस्तुत शोध कार्य शोधकर्त्री का प्रथम तथा लघु प्रयास हैं। अतः अनेक कमियों का रह जाना इसमें संभव हैं। समयाभाव के कारण प्रस्तुत अध्ययन में प्राचार्यों की प्रबंधन के शिक्षक व प्रशिक्षुओं की गुणवता उन्नयन पर प्रभाव के कुछ ही पक्षों का अध्ययन किया हैं। अतः यदि अन्य पक्षों का भी अध्ययन किया जाए तो अधिक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। शोधकर्ता का यह विश्वास है कि प्रस्तुत शोध सभी स्तर की शैक्षणिक संस्था की प्रबंधन शैली को एक नई दिशा में विकास हेतु उपयोगी रहेगा। यह लघु शोध प्राचार्य की प्रबन्धन शैली का शिक्षक व प्रशिक्षु की गुणवता उन्नयन पर प्रभाव को दृष्टिगत करने का एक लघु प्रयास हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

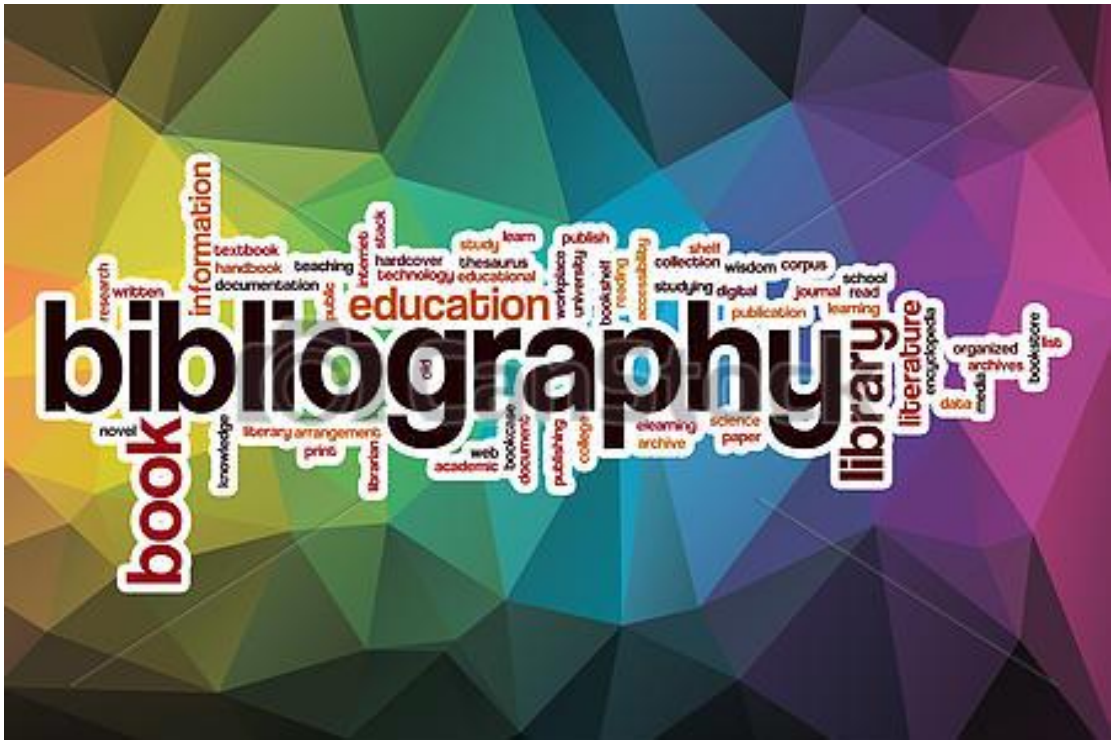
bibliography
education
library
book
information
textbook
handbook
documentation
teaching
hardcover
technology
educational
thesaurus
study
learn
publish
collection
wisdom
corpus
school
read
journal
digital
studying
publication
learning
literature
encyclopedia
organized
archives
bookstore
list
data
media
science
paper
elearning
archive
college
publishing
bookcase
web
academic
arrangement
library
print
librarian
knowledge
novel
written
research
stack
shelf
bookshelf
reading
accessibility
workplace
university

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अग्रवाल, जे.सी., (2007),** "शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबन्धन के मूल तत्व," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. **बघेला, एच.एस., (2007),** "शैक्षिक प्रबंधन एवं विद्यालय संगठन" राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।
3. **जी.एस. सुधा, (2005),** "प्रबंधन अवधारणाएं एवं संगठनात्मक व्याख्याएं" रमेश बुक डिपो, जयपुर।
4. **केशवप्रसाद, (2007),** "विद्यालय व्यवस्था," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. **कमूर, बीना मृदुला (2007),** "शिक्षा में मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. **कुदेशिया, उमेशचन्द, (2008),** "शिक्षा प्रकाशन" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. **मिश्रा, महेन्द्र कुमार, (2007),** "विद्यालय प्रबंधन एवं शैक्षिक नवाचार," युनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा.), लि., जयपुर।
8. **मिश्रा, महेन्द्र कुमार, (2007),** "विद्यालय प्रबंधन एवं शैक्षिक सामाजिक परिवर्तन," क्लासिक कलेक्शन, जयपुर।
9. **ओड एल. के., (2007),** "शैक्षिक प्रशासन" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
10. **सरीन एण्ड सरीन, (2008),** "शैक्षिक अनुसंधान विधियां," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

11. **श्रीवास्तव, डी.एन. (2007),** "सांख्यिकी एवं मापन," अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

12. **सिंह, मयाशंकर, (2007),,** "शैक्षिक प्रबंधन एवं शिक्षण तकनीकी, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।"

13. **सिंह, अरूण कुमार, (2013),** "मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां," मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

14. **सिंह, रामपाल व शर्मा, ओ.पी. (2007/08),** "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी," अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

15. **शर्मा, आर.ए. (2009),** "शिक्षा अनुसंधान", आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

16. **सुखिया, एस.पी., (2007),** "विद्यालय प्रशासन, संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा," विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

17. **वर्मा जे.पी., (2007),** "शैक्षिक प्रबंध," राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

शोध पत्र–पत्रिकाएँ :–

1. शिविरा पत्रिका, (2016) : "वरिष्ठ सम्पादक" माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
2. युवादृष्टि, (2015) : अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, युवालोक, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002।

वेबसाईट्स

1. www.education.com
2. www.google.com
3. shodhganga.inflibnet.ac.in
4- www.wikipedia.com

परिशिष्ट